भागवत के दृश्यों का अर्थ

ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीरराघव राव

भागवत के दृश्यों का अर्थ

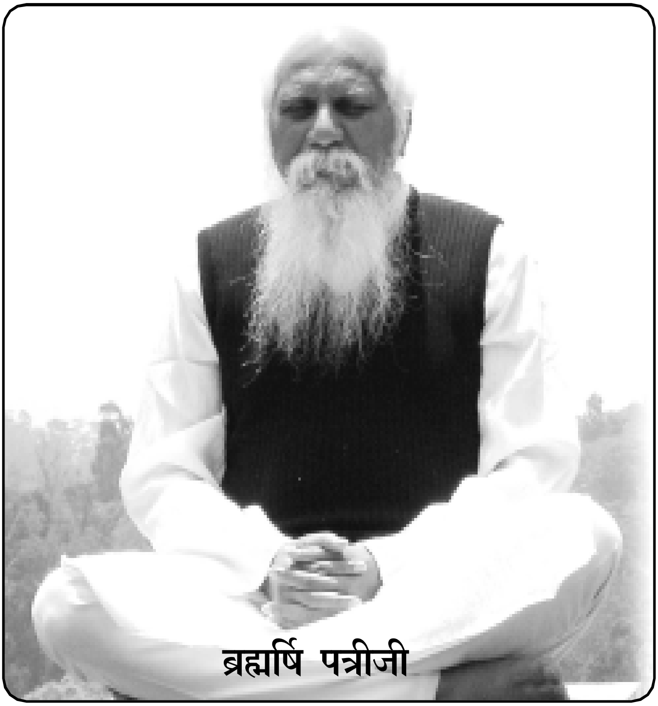

ब्रह्मर्षि पत्रीजी

रचना, प्रचुरण : **ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीरराघव राव**

हिन्दी अनुवादः **श्रीमति वेगी पद्मा**

For Books Please Contact :
TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.80/-

सूची

1. भागवत के दृश्यों का अर्थ 3
2. 'श्रीकृष्ण का कारागार मे जन्म लेना' 5
3. 'श्री कृष्ण द्वारा दुर्जनों को दंड -सज्जनों की रक्षा' 7
4. 'श्रीकृष्ण भगवान द्वारा दूध, दही,मक्खन की चोरी' 10
5. 'श्री कृष्ण द्वारा रोली खींचना' 13
6.'श्री कृष्ण के मुख में सभी लोको का दर्शन' 16
7.'काले नाग के फन पर नृत्य करना' 19
8.'श्री कृष्ण भगवान द्वारा सरल तरीके से राक्षसों का संहार' 21
9.'गोपिंकाओ का जल मे खेलना,श्रीकृष्ण द्वारा उनके वस्त्रो का हरण' .. 23
10.'श्री कृष्ण का गोपिकाओं के संग क्रीड़ा(खेल-कूद)' 25
11.'श्री कृष्ण भगवान द्वारा गायों को चराना ' 27
12.'श्री कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत को उठाना' 30
13.'श्री कृष्णा चाणुर -मुष्टि कुल को मल्ल युद्ध मे हराना,
मदमस्त हाथी को मार गिराना' 32
14. 'कंस का संहार करना' 33
15.'शिशुपाल की १०० गलतियों की माफी' 35
16.'श्रीकृष्ण द्वारा कुचेल की सेवा आदर करना' 40
17.'पुराण ग्रंथ-शास्त्र' 42
18.'शिबी चक्रवर्ती' 43
19.'भक्त कन्अप्पा' 44
20.'यमलोक' 46
21.'भक्त मार्कन्डेया' 51

भागवत के दृश्यों का अर्थ

आज के इस युग में भागवत का अर्थ क्या है ?ऐसा पूछने पर तो लोग कुछ नहीं बता पाएंगे। श्री कृष्ण के बारे में लोग जानते हैं, परंतु यह नहीं जानते की भागवत ही श्री कृष्ण की जीवन कथा है।

भागवत ग्रंथ द्वारा व्यास महर्षि ने श्री कृष्ण के जीवन की गाथा को और उनके द्वारा कुछ महत्वपूर्ण विषयों को संसार से परिचित कराया है।

पर इस जगत में भगवान श्री कृष्ण के जीवन की घटनाओं को सिनेमा के रूप में, नाटकों के रूप मे, टीवी सीरियल के रूप में, देखकर आनंदित हो रहे हैं और अपना समय व्यतीत कर रहे हैं। लेकिन व्यास महर्षि ने इस महापुरुष की जीवन गाथा को इस संसार के आनंद के लिए नहीं दिया है। श्री कृष्ण के जीवन के हर घटना से उन्होंने इस दुनिया को संदेश दिया है, इसीलिए हर घटना केवल हमारे 'मनोविनोद के लिए नहीं, वरन संदेशात्मक' में लेना चाहिए। इन संदेशों को हम अपने आनंद के लिए नहीं ,वरन इन विषयों का अर्थ जानकर

अपने जीवन में इनका अनुसरण करके हम अपने जीवन को धन्य बना सकते हैं ।

इतना ही नहीं भागवत का अर्थ और उनकी घटनाओं को समझने के लिए, मुख्य रूप से श्री कृष्ण भगवान कौन है यह जानना आवश्यक है। कृष्ण को जाने बिना भागवत का अर्थ नहीं जान सकते ।

श्री कृष्ण का नाम लेते ही सभी उनके रूप की ही कल्पना करते हैं। और ऐसा समझते हैं कि वह रूप ही श्री कृष्ण है। इस दृष्टि से भागवत पढ़ते हैं। उसमें चित्रित घटनाओं को वह बाह्य दृष्टि से समझने का प्रयत्न करते हैं। इसी दुविधा में कुछ तथ्य और विषय समझ में नहीं आते, श्री कृष्ण का व्यवहार समझ नहीं पाते।

हमें यह ज्ञात होना चाहिए की श्री कृष्ण को हम जिन खुली आंखों से देखते हैं ..वे देह नहीं है ,वह एक सर्वशक्तिमान, जन्म मृत्यु से परे, सर्व जगत में व्याप्त और हममें बसने वाले आत्मा है 'अहं आत्मा गुणकेशा' (भ.गी.10-20) यह वाक्य श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा था ना?

जब कोई श्री कृष्ण को 'रूप दृष्टि' से न देखकर 'आत्म दृष्टि' से देखते हैं, तो भागवत ही नहीं, श्रीकृष्ण के द्वारा गीता का भी ज्ञान आसानी से प्राप्त हो जाएगा। आत्म दृष्टि या आत्मा स्थिति पाने के लिए किसी को भी ध्यान करना होगा। ध्यान किये बिना भागवत और भगवत गीता कभी समझा नही जा सकता।

‘श्रीकृष्ण का कारागार मे जन्म लेना’

देवकी वसुदेव के आठवें गर्भ के रूप मे श्रीकृष्ण ने कारागार मे जन्म लिया। कारागार के ताले अपने-आप खुल गए, जो पहरेदार थे, वे गहरी नींद मे चले गए। वसुदेव श्रीकृष्ण को एक टोकरी मे रखकर द्वारका के लिए रवाना हुए, जाते समय नदी दो भागो मे बंट गई .उस समय बारिश हो रही थी। वासुदेव ने नदी की ओर कदम बढ़ाया। श्रीकृष्ण की रक्षा के लिए सात मुंह वाले सर्प ने अपना फन फैला दिया। इस तरह बारिश ने भी श्री कृष्ण जी को भीगने नहीं दिया। और बड़ी सुरक्षा से द्वारका मे उनका आगमन हुआ। इस तरह

वासुदेव ने अपना कार्य पूर्ण किया ।

अब हमें इसका अर्थ जानने का प्रयत्न करना चाहिए. कि कृष्ण के जन्म के पीछे का कारण क्या है? संसार में धर्म की स्थापना के लिए के लिए ही श्री कृष्ण जी का अवतार हुआ। वैसे ही महान कार्य करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। इसलिए प्रकृति और देवताओं ने भी पूरा सहयोग दिया। दिखने वाले देवता ताले खोल देता है, तो कोई और देवता पहरेदारों को गहरी नींद में सुला देता है। उसी प्रकार प्रकृति का एक भाग यमुना नदी दों भागों में बट कर मार्ग देती है। वर्षा के कारण एक और देवता सात फनों के सांप के रूप मे आकर छतरी बनकर उनकी रक्षा करते है.इस प्रकार वासुदेव अपने कार्य को निर्विघ्न कर पाए।

इस घटना से इसका अर्थ समझते हैं कि, जो धर्म की रक्षा करता है। जो धर्म को अपने आचरण में लाता है। जो धर्म की रक्षा के लिए प्रयत्न करते हैं। लोक कल्याण के लिए कार्य करते हैं। उनकी मदद प्रकृति, और प्रकृति में रहने वाले सभी देवगन करते हैं, रक्षा करते रहते हैं। कई प्रकार से उन्हें सहायता प्रदान करना ही इस विषय का अर्थ है। इसीलिए आप सभी को भी लोक कल्याण के लिए कार्य करते रहना चाहिए। धर्म की रक्षा करनी चाहिए। धर्म युक्त कार्य करने चाहिए... लोक विरूध्द और धर्म के विरूध्द कार्य नहीं करने चाहिए ,यही बताना इस तथ्य का संदेश है।

जानिए कि देवी, देवता है, इन देवी देवताओं को हमारे चढ़ाए गए नारियल और केले की आवश्यकता है क्या? लेकिन वह सब हमारे दिए केले और नारियल के लिए नहीं है। वह सब इसकी आशा नहीं रखते। जिनका देह नहीं है, वे इसका क्या करेंगे? इसलिए वे उनकी आशा नहीं रखेंगे। यह हमें जानना चाहिए। फिर वह क्यों है ? जो लोक कल्याणकारी कार्य करते हैं। जो धर्म की रक्षा करते हैं। उनकी मदद के लिए ही वे हैं। निसंदेह ऐसे लोगों की अदृश्य रूप से रक्षा करते हैं। यह विषय बताना ही एक मात्र उद्देश्य है, इतना ही नहीं लोकल्याणकारी कार्य करने वालों को सृष्टि से, प्रकृति से हमेशा मदद मिलती है। इस विषय का यही संदेश है।

‘श्री कृष्ण द्वारा दुर्जनों को दंड -सज्जनों की रक्षा’

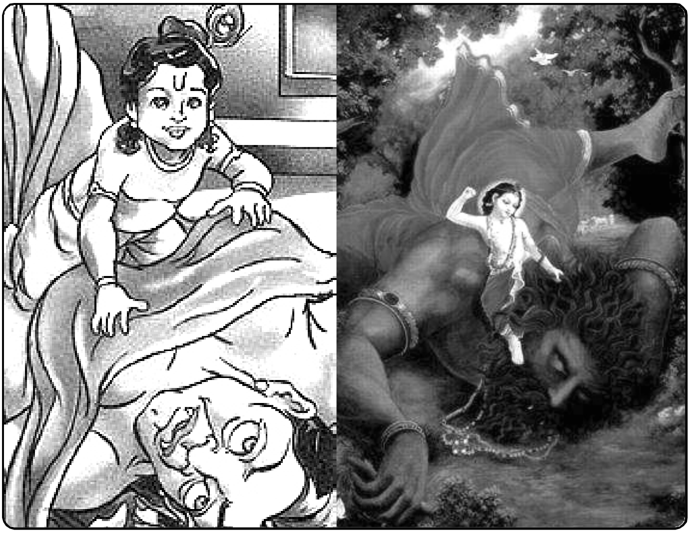

भागवत में बहुत सी घटनाओं में श्री कृष्ण भगवान द्वारा राक्षसों-दुष्टौ को दंडित करना और उनका संहार करना हमने देखा है। वैसे ही गरीब, निर्बल, निस्सहाय और सन्मार्ग में चलने वालों की रक्षा करते दिखते है ।

यहां पर राक्षस वाक्य का अर्थ यह नहीं कि यह एक विशेष जाति वर्ग है. वह भी मानव जाति में ही आते हैं। जो मानव वैसे काम करता है। वह राक्षस कहलाता है । यानि कि जो सामने वाले पर हिसां करके आनंदित होता है, वहीं राक्षस कहलाता है। आज के युग में जो मानसिक रूप से विकलांग होता है। उन्हें भी राक्षस कह सकते हैं। किसी को प्रताड़ित करके आनंदित होने वाला इन्सान भी राक्षस कहलाता है। इतना ही नहीं राक्षसों को रक्त मांस बहुत प्रिय है। मांसाहार भोजन राक्षसों को बहुत प्रिय है।

भागवत की घटनाओं के द्वारा भगवान राक्षसों को दंड देते हैं, इतना ही नहीं अनेकों बार उन्हें मार कर कठिन दंड भी देते हैं। यानि कि जो मूक जीव जंतुओं को प्रताड़ित करके मार देते हैं वैसे ही जानवरों का मांस खाकर हिंसा का कारण बनते हैं। वैसे ही लोग भगवान के द्वारा कठिन दंड प्राप्त करते हैं। श्री कृष्ण भगवान द्वारा राक्षसों को संहार करने की घटना का अर्थ यही है।

लेकिन इस जगत में मनुष्यों में अंधविश्वास यह है कि, मैं कैसा भी जीवन जियूं , कुछ भी करूं, श्री कृष्ण भगवान की मूर्ति को रखकर पूजा करके, भजन करने से वह हमारी रक्षा करेंगे, ऐसा लोग समझते हैं ,इसीलिए वह घर पर जीव हिंसा करते हैं. मंदिर जाकर के पूजा करते हैं। लेकिन भागवत के विषयों के अनुसार ऐसे लोगों की रक्षा नहीं हो पाती .निश्चित रूप से वह दंड पाते है राक्षसों को दंड देना ही इसका अर्थ है।

वैसे ही राक्षस मायावी रूप में आकर , श्री कृष्ण भगवान उन्हें पहचान कर संहार करना हमने इस घटना में देखा है।

वैसे ही पूतना ,सकटासुर जैसे राक्षस अपने बहुरूपी वाले वेश में आकर ,श्री कृष्णा उन्हें पहचान कर उनका संहार करते हैं। यानि अर्थ यह है कि राक्षस जैसे कार्य करने वाले कई वेश धारण करके, कितनों को धोखा देकर, कितना ही चालाकी दिखाएं ,वह बच नहीं सकते। वे सब भगवान के दंड के पात्र बनेंगे यह हम जान सकते हैं .इस घटना के द्वारा यही संदेश है। इस तरह घर पर हिंसा करके, भक्त का वेश बनाकर, मंदिर जाने पर भगवान हमें पहचान ही लेंगे। यह हमें समझना है उनसे हम बच नहीं सकते। हमें अगर भगवान से रक्षा चाहिए, तो हिंसा नहीं करनी चाहिए।

इसलिए कोई भी इस लोक में, चाहे वह बलहीन क्यों ना हो, मंदबुद्धि क्यों ना हो, पदविहीन क्यों ना हो, निस्सहाय क्यों ना हो, आखिरकार मूक जंतुओं का प्राण लेने वाला क्यों ना हो किसी को कष्ट पहुंचाने वाला, किसी को नुकसान देने वाला, दुख देने वाला हो, उसे निश्चित ही दंड भोगना होगा। यही इस घटना का अर्थ है। चाहे वह हिंसा स्त्रियों के लिए हो, बच्चों के लिए हो, वृद्धो के लिए हो, या फिर जीव जंतुओं के लिए या पक्षियों के लिए हो। यह सभी सृष्टि में भगवान के द्वारा बनाए गए भगवान के ही रूप हैं।

इसलिए हमें किसी को दुख नहीं पहुंचना चाहिए। किसी की हिंसा नहीं करनी चाहिए राक्षसों सा व्यवहार नहीं करना चाहिए। दुष्टतापूर्ण कार्य नही करनी चाहिए। यह नहीं जानते हुए सृष्टि के विरुद्ध में कोई भी कार्य करें तो उसका फल भुगतना ही होगा। अंततः कष्ट और हानि उठानी ही पड़ेगी। यही इसका संदेश है।

वैसे ही इस सृष्टि में अच्छे लोग, सन्मार्ग में चलने वाले लोगो की हमेशा रक्षा होती है। ज्यादातर लोगो को कोई हानि पहुंचती है तो वह कहते हैं कि, हमारे साथ अन्याय हुआ है, कई बार वह भगवान को भी दोष देते है, मगर इस सृष्टि में अच्छे मार्ग पर चलने वाले, धर्म के मार्ग पर चलने वालो, की हमेशा रक्षा हुई है, भागवत के कई घटनाओं के द्वारा हमने यह जाना है। इसीलिए किसी को भी दुष्टता और राक्षसत्व को छोड़कर सन्मार्ग और धर्म मार्ग को अपनाना चाहिए, यही इस घटना का संदेश है।

यही नही कि हमारी रक्षा करने वाला कोई नहीं, हमारी रक्षा नहीं हो सकती, यह नहीं सोचना चाहिए। इस सृष्टि में अच्छे लोगों की हमेशा रक्षा हुई है। दुष्टो को निश्चित रूप से दंड मिलता है। भगवान श्री कृष्ण भागवत गीता में इस श्लोक के द्वारा स्पष्ट रूप से कहा है।

श्लोकः पवित्रानाय साधु नाम विनाशाय च दुष्टताम
धर्म संस्थापनाध्याय संमभवामी युगे !युगे! (भ.गी.)

तात्पर्यः- साधुओं की रक्षा के लिए ,दुष्टो को दंड देने के लिए, ,संसार में धर्म स्थापना के लिए बीच-बीच में मैं अवतार लूंगा।

इसके अनुसार हमारी रक्षा पूजा,आराधना की वजह से नहीं होती, हमारे व्यवहार से ही हमारी रक्षा होती है। कमजोरों पर हिंसा , जंतुओं को मार कर खाना, और राक्षसो सा व्यवहार करना, कोई भी हो उसे भगवान द्वारा दंडित किया जायेगा। यानि कि कष्ट भुगतना होगा, यही इस विषय का संदेश है।

'श्रीकृष्ण भगवान द्वारा दूध, दही,मक्खन की चोरी'

श्रीकृष्ण भगवान बाल्यकाल मे दोस्तो के साथ मिलकर सबके घरो से दूध, दही, मक्खन चोरी किया करते थे। उसे दोस्तो के साथ मिल बाँट कर खाते, और शरारत करते ,भागवत में इसका वर्णन हुआ है। इस विषय का भी अर्थ है।

दूध, दही, मक्खन, घी और मिठइयां सब कुछ गाय के दूध से ही बनाया जाता है। यह सब मानव के लिए शुद्ध सात्विक भोजन है। इस प्रकार के भोजन से मनुष्य की बुद्धि बढती है, मन की शुद्धि भी होती है, बुद्धि का भी विकास होता है, और भी कई प्रकार के लाभ होते हैं।

श्रीकृष्ण भगवान दूध, दही, मक्खन चोरी करते थे। यानि कि वह उसे बहुत पसंद करते थे। चोरी करने जितना पसंद करते हैं, यह अर्थ है। मक्खन की चोरी, यानि की मक्खन उन्हें अत्यंत प्रिय था यह हमें समझना है।

देखिए, किसी बच्चों को मिठाई पसंद है तो वह उसे किसी को देखे बगैर लेकर खाता है। कारण यह है कि वह उसे बहुत पसंद है। श्री कृष्ण भगवान को चुराकर खाने की आवश्यकता है क्या? नहीं है ना, उनके तो घर पर ही भंडार था। दूध, दही, मक्खन भरपूर था। यशोदा मां क्या उन्हें खाने से मना करती ? प्रेम पूर्वक पेट भरकर उन्हे खिलाती। तो उन्हें सबके घर से चुरा कर खाने की क्या आवश्यकता है? उनके पास ना हो तो ही चुराने की जरूरत है।

इसलिए अगर वे दूध, दही, मक्खन चोरी करते हैं। यानि कि वह सब उन्हें उतना पसंद था, यह हमें जानना चाहिए। इस घटना के द्वारा यह संदेश चलता है, कि हमे भी श्री कृष्ण जैसा ही आहार लेना चाहिए, वैसा ही शुद्ध सात्विक भोजन खाना चाहिए।

लेकिन इस घटना का अर्थ लोग नहीं समझते, आज के युग में सभी लोग तमोगुण, रजोगुण वाले आहार को यानि कि तामसिक, राजसिक आहार ले रहे हैं, पसंद कर रहे हैं, यह लोग सात्विक आहार को प्रधानता नहीं दे रहे, अभी मनुष्य की स्थिति ऐसी हो गई है कि वह मांसाहार को प्रधानता दे रहे हैं, मांस खाना पसंद कर रहे हैं और हर दिन खा रहे हैं।

लेकिन सच तो यह है कि, इस घटना के अर्थ को जो समझेंगे वह मांसाहार को नहीं लेंगे, नहीं खाएंगे, सात्विक आहार ही पसंद करेंगे। श्री कृष्ण भगवान की आराधना करने वाले सभी को इसका अर्थ समझ में आता है। इसलिए वे श्री कृष्ण की पसंद का आहार ही लेते हैं, इसलिए हमें सभी विषयों के अर्थो को समझना होगा।

यही नहीं, श्री कृष्ण भगवान गायों को अत्यधिक पसंद करते थे। गायों के द्वारा मिले आहार के पीछे भी एक कारण है। क्योंकि सभी जीव भगवान के ही रूप है। सभी जीवों से प्रत्यक्ष रूप से या परोक्ष रूप से मनुष्यों को उपकार, या लाभ ही मिलता है। लेकिन सभी जीवो में गाय का एक विशेष महत्त्व है। इसीलिए हिंदू गौ की पूजा करते हैं । उसे देवता मानते है। कारण यह है कि, गाय के द्वारा हमें सभी उपयोगी चीज मिलती हैं दूध को ही ले लीजिए, दूध से कई चीज बनाई जा सकती हैं। यही नही, शिशु को अगर मां का दूध कम पड़ने लगे, तो गाय के दूध को श्रेष्ठ मानकर पिलाया जाता है। गर्मी के दिनों में दूध से मट्ठा बनाकर शरीर में शीतलता लाने के लिए हम पीते हैं।

यही नहीं, गोमूत्र द्वारा कई औषधियाँ बनाई जाती हैं। गाय के गोबर से हम घरों को लीपते हैं। घर का वातावरण शुद्ध हो जाता है। गोबर के कंडे से रसोई में खाना बनाते हैं। वैसे ही हम गाय को कितना भी खिलाएं, वह हमें उपयोगकारी चीज ही देती हैं, व्यर्थ कुछ नहीं रहता। और किसी भी जीवो को देखें तो कुछ ना कुछ व्यर्थ रहता ही है, लेकिन गाय के साथ ऐसा नहीं है, इसीलिए गाय का एक विशिष्ट स्थान है।

इसलिए उस गाय से प्राप्त दूध, दूध से बने आहार की एक विशेषता होती है। उस तरह का सात्विक आहार हमें लेना चाहिए, शुद्ध सात्विक शाकाहारी आहार लेना चाहिए, मांसाहार को त्यागना होगा ,यही इस विषय का अर्थ है। इसलिए हमें श्री कृष्ण जैसा 'हमें गाय के दूध, दूध से बने पदार्थ को ही लेना चाहिए, ना कि उसका मांस' यही इस घटना का तात्पर्य है।

‘श्री कृष्ण द्वारा रोली खींचना’

श्री कृष्णा घर पर न रहकर के इधर-उधर घूम कर शोर मचाते थे। तब यशोदा ने श्री कृष्ण कहीं ना जा सके, इसलिए एक रोली से बांध दिया। श्री कृष्ण उस रोली को खींचते हुए बाहर आ गए। बाहर आने पर वह रोली दो पेड़ों के बीच फंस गई। कृष्ण जोर लगाकर खींचने पर वो दोनों पेड़ गिर गए। पेड़ पर दो गंधर्व कन्याएं थीं, वे कृष्ण के समक्ष आकर प्रणाम करके पाप से

विमुक्त हो गई। श्री कृष्ण को धन्यवाद कहकर वे अदृश्य हो गई।

इस घटना का अर्थ समझते हैं, वह गंधर्व कन्याएं शाप मुक्त हुई। यानि कि अपने किए पापों के दंड से मुक्त हुई। पाप करना, यानि की गलती करना उनका पेड़ बन जाना, यानि कि उन्होंने कोई बड़ा पाप किया है ,और उसका दंड उन्हें मिला यही अर्थ है। यानि कि उन्होंने घोर अपराध किया है।

क्योंकि इस सृष्टि में खनिज वर्ग... को कम आंका गया है, यानि कि पर्वत पठार को कम वर्ग में रखा गया है। कारण यह है कि वे ना तो हिलते हैं, ना हीं बढ़ते हैं। उससे ऊंची जाति में वृक्ष आते हैं कारण यह है कि, वृक्ष, पेड़, पौधे हिलते हैं, और बढ़ते हैं। वृक्ष जाति से श्रेष्ठ जंतु जाति है। कारण यह है कि, जंतु हिल सकते हैं, घूम सकते हैं, और बढ़ सकते हैं। वैसे ही जंतु जाति से उन्नत जाति मनुष्य जाति है। कारण यह है कि मनुष्य हिल सकते हैं, घूम सकते हैं, और बढ़ सकते हैं यही नहीं भूमि पर कोई भी कार्य वह कर सकते हैं। यानी कि वह समझ सकते हैं। उस मानव जाति से उन्नत जाति देवताओं, यक्ष, गन्धर्वो की है। कारण यह है कि उन्हें इंद्रियों का ज्ञान और इंद्रियों की शक्ति होती है।

इस तरह उन्नत जाति में आने वाले गंधर्व कन्याएं वृक्षो की भांति गिरी पड़ी हुई है। यानि कि वह घोर अपराध से दंडित हुई। इस घटना का तात्पर्य यह है, कि घोर अपराध करने पर भी श्री कृष्ण के स्पर्श से उन्हें मुक्ति मिल गई। यानि की उस कष्ट से उन्हें छुटकारा मिल गया।

इसके अनुसार हमें यह जानना होगा, श्रीकृष्ण जितना महाज्ञानी संसार में होने से, उनकी संगत से, कितने श्राप ग्रस्त लोगों को यानि की कष्ट भुगतने वालों को, कष्टो से मुक्त हो जाते है, यही इस विषय का अर्थ है।

देखिए इस समय संसार में सभी लोग कष्ट से ही जीवन व्यतीत कर रहे है। यानि उनके पूर्व जन्म के पापों का दंड भुगत रहे हैं और कुछ नहीं। कुछ-कुछ को कम सजा तो कुछ को कठिन सजा, यानि कुछ को सहन न कर सके जितना कष्ट, और कुछ को बर्दाश्त से अधिक कष्टो को झेलना पड़ता है। वैसे लोगो को कष्टो से, मुक्ति दिलाने के लिए महा ज्ञानी योगेश्वर श्री कृष्ण भगवान ने धरती पर अवतार लिए है। उनके कारण उनके साथ में रहकर भी कष्ट को

भुगतते हुए कई लोग कष्ट से मुक्ति भी पाते हैं, बाहर निकल पाते हैं, यही संदेश है।

इस विषय से हमें यह समझना है। उतने महाज्ञानी के सानिध्य में रहकर कोई भी कष्टो से बाहर निकल सकता है, यह हम जान सकते हैं। लेकिन हमें इतने बड़े महाज्ञानी की संगति नहीं मिल सकती है। कारण क्योंकि वह अभी भूमि पर नहीं है । फिर हम कष्टो से कैसे उभर सकते हैं, यह संदेह हमें आ सकता है। लेकिन श्री कृष्ण भगवान से हम प्रत्यक्ष रूप से न रहकर अप्रत्यक्ष रूप से रह सकते हैं। क्योंकि उन्होंने भगवत गीता द्वारा बहुत सारा ज्ञान दिया है। मनुष्यों को दुख से बाहर निकल कर आने में पाप से मुक्ति पाने के लिए सन्मार्ग का उपदेश दिया है। उस ज्ञान मार्ग को हमें समझना होगा। और उसे आचरण में लाना होगा। तभी हम उन देवताओं की तरह श्राप से मुक्ति पा सकते हैं। यानि कि कष्टो से बाहर निकल पाएंगे। कितना भी घोर कष्ट भुगत रहे हो, उनसे मुक्ति पा सकते हैं, यही इस घटना का संदेश है।

यहां पर हम प्रत्यक्ष संगति देख रहे हैं। अगर वह गीता के संदेश का आचरण कर रहे हैं, तो प्रत्यक्ष सानिध्य न होने पर श्री कृष्ण भगवान से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ रहे हैं। किसी भी तरह उनके साथ जुड़ रहे हैं। श्री कृष्ण भगवान के सानिध्य में श्राप से मुक्ति हुई। यह अर्थ है यानि कि कष्टो से बाहर निकल आए। इसलिए ‘श्री कृष्ण भगवान के अद्भुत गीता के उपदेशों को हमें आचरण में लाना चाहिए. तब आप भी कष्टो से मुक्ति पायेंगे’ यही इस घटना का अर्थ है।

‘योगी ध्यान बताते हैं -ध्यान करते हैं’

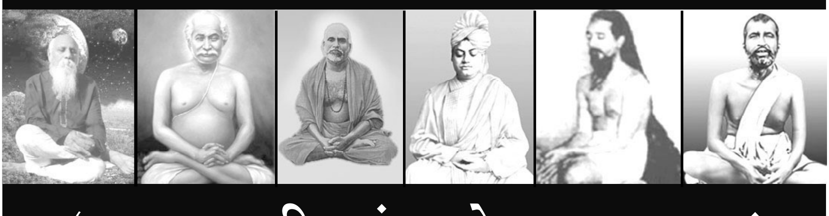

‘ध्यान यानी सांस के ऊपर ध्यान’

'श्री कृष्ण के मुख में सभी लोको का दर्शन'

श्री कृष्णा एक बार मिट्टी खा रहे थे। बलराम और गोपिकाओं ने उन्हें देख लिया। मिट्टी खा रहे हो? कृष्ण ने कहा, नहीं। बलराम और गोपीकाएं कहने लगे, तुम झूठ बोल रहे हो। मां यशोदा को जाकर बताते हैं, ऐसा कहकर वे श्री कृष्ण को यशोदा के पास ले जाकर देखिए, मॉ ! यशोदा मां! श्री कृष्ण

भगवान मिट्टी खा रहे हैं। तब यशोदा ने कहा, सही में? श्री कृष्ण ने कहा, नहीं। तब यशोदा ने कहा, मुंह खोलो। कारण यह था कि मिट्टी खाने पर मिट्टी मुंह में दिखाई देगा।

श्री कृष्ण ने अपना मुंह खोला। यशोदा को बड़ा आश्चर्य हुआ, अचरज हुआ। कारण यह था कि, श्री कृष्ण के मुंह में समस्त लोक दिखाई दिए। करोड़ों की संख्या में ग्रह मंडल, कई अद्भुत आश्चर्यचकित करने वाले दृश्य, और समस्त सृष्टि दिखाई दिए। तब वह समझी कि यह सामान्य बालक नहीं है। और उसे अपने पास ले लिया।

इसका अर्थ समझते हैं। भगवान एक चैतन्य शक्ति है, और सृष्टि में पूर्ण व्याप्त हैं .उन्हीं के द्वारा यह सृष्टि और सृष्टि के समस्त लोक का निर्माण हुआ। इस समस्त लोक में 14 भुवन का निर्माण योगियों द्वारा हुआ. इन्हें ही सात उधर्व लोक सात अधो लोक का नाम दिया. वैसे ही (1) भूलोक (2)भुवर लोक (3) सुर्वलोक (4) जना लोक (5) महालोक (6) तपो लोक (7)सत्यलोक यह सात उधर्व लोक है।

वैसे ही (1) अतल, (2) वितल, (3)सुतल, (4) रसातल, (5)महातल, (6) तलातल, (7) पाताल लोक, अधो लोक के नाम से जाना गया। वैसे ही इस लोक में कई लाख जीव जंतुओं की उत्पत्ति भगवान के चैतन्य से हुई है। यानि की सब कुछ उनमे है। वैसे ही भगवान सभी जीवो में है और उनको चेतना देकर उनका नेतृत्व करते है। हम देखे तो 'भगवान में ही सब कुछ है। और सभी जीवो में भगवान ही है यही अर्थ समझते हैं। इसीलिए कहते हैं, 'हम सृष्टि में हैं, और सृष्टि हम में है' यानि कि मनुष्य में ही समस्त है, यानि की समस्त लोक हममे ही है, यही अर्थ है।

इस घटना के द्वारा इस सत्य को संसार को बताना है। यही इस घटना का अर्थ है। यानि की समस्त लोक बाहर नहीं है, हमारे ही भीतर है, यही संदेश है।

यदि हम देखें, तो सृष्टि के रहस्य का पता करने के लिए मनुष्य राकेट द्वारा दूसरे ग्रह में जा रहे हैं। शक्तिशाली टेलीस्कोप द्वारा सृष्टि रहस्य का पता लगा रहे हैं। उपग्रह द्वारा सृष्टि के अद्भुत विषयों की जानकारी लेने का प्रयास

कर रहे हैं। वैसे ही मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग करके ,कितने प्रयासो के पश्चात, सृष्टि के अल्प ज्ञान ही अर्जित कर पाए हैं। सृष्टि के बारे में बहुत कम जानकारी ही पता लगा पाए हैं। वैसे ही निरंतर प्रयास कर रहे है। कई लाख करोड़ रूपए कई देश मिलकर खर्च कर रहे हैं। लेकिन कोई भी इससे ज्यादा समझ नहीं पा रहे हैं।

लेकिन भागवत के इस घटना का अर्थ देखें, तो जैसे समस्त सृष्टि हम में ही है यह सत्य हम समझ पाए तो कोई भी बाहर की यात्रा का प्रयास नहीं करेंगे, अपने ही भीतर की यात्रा करेंगे। कारण यह है, कि सब कुछ हम में ही है, इसलिए सृष्टि रहस्य को यदि जानना हो, सृष्टि के लोको को जानना हो तो,कोई भी हो वह अपने ही भीतर यात्रा करके अंतर्मुख होकर यानि की सुभाष पत्री के कहे अनुसार ‘स्वास के ऊपर ध्यान’ करना होगा।

जानिए कि, कितने ही करोड़ खर्च कर ले, हमे जो नहीं हासिल होगा, अंतर्मुख ध्यान के द्वारा खर्च किए बगैर हासिल कर सकते हैं, इस घटना के संदेश से यह स्पष्ट होता है। एक बार और समझे। श्री कृष्णा में ही नहीं, हर एक में समस्त लोक है ,यही इस घटना का अर्थ है। यानि कि ऐसा कुछ नहीं जो हममे नहीं है। अपने आप पर विचार करें, ध्यान करें, तो ऐसा कुछ भी नहीं जो ना जान सके, यही इस घटना का संदेश है। इसीलिए सभी योगी लोग ध्यान के द्वारा सृष्टि के रहस्यों का पता करते है।

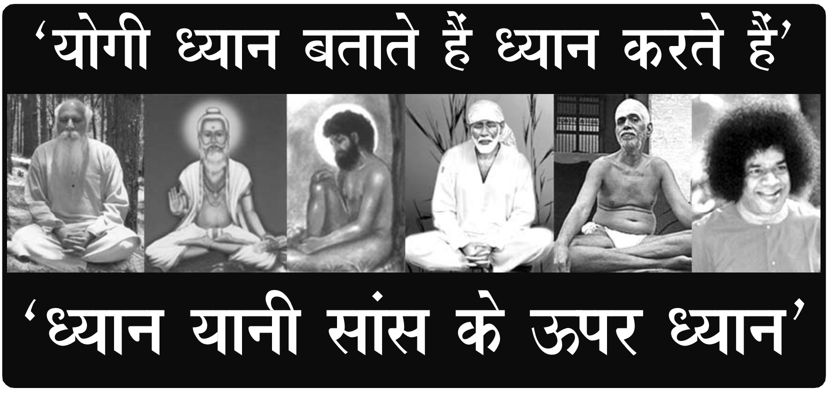

'काले नाग के फन पर नृत्य करना'

वैसे ही एक बड़ा सांप काला नाग, जो कि गायों, और ग्वालो को मार कर, उनको निगल लेता, यह देखने वाले श्री कृष्ण जी उस सांप को सिर्फ दंडित ना करके, उसके फन के ऊपर नृत्य करते हुये, उसके अहंकार को चूर-चूर कर देते है, तब से उस काले नाग से किसी को भी दुख ,तकलीफ नही हुआ।

इसके अनुसार इस सृष्टि मे दुष्टों को दंड ,कमज़ोर और बलहीनों की रक्षा होती है, यह जानना ही इस विषय का संदेश है।

वैसे ही इस सृष्टि में कितना ही बलवान, कितना ही धनवान, आखिरकार वह राजा या कोई वीर क्यों ना हो,अपने बल के घमंड से, अपने पद के गर्व से, मै कुछ भी करु फर्क नहीं पड़ता, ऐसा सोच कर सामान्य और बलहीन से, अपने से कम लोगों को कष्ट देकर, उन पर अत्याचार करके अपने स्वार्थ के लिए उन्हें पीड़ा देकर अपने अधिकार के बलबूते उन्हें मारना, वो कोई भी हो, इस सृष्टि में उन्हें दंड भुगतना ही होगा.उनके घमंड को चूर-चूर यानि कि दांत निकाले सांप के समान होना पड़ेगा । उन्हे कठिन दंड भुगतना पड़ेगा चाहे, वो कितना ही महान क्यों ना हो उसे मिट्टी में मिल जाना होगा, इस विषय का यह संदेश है।

वैसे ही हमारी बराबरी कोई नहीं कर सकता, ऐसी सोच रखने वाले कितने ही संस्थापक, राजा, राजनीतिज्ञ आखिरकार उन्हें लोगों के द्वारा दंड मिला। वैसे ही हिम्मत दिखाने वाले गुंडे, बदमाश, राजनीतिक नेता अंत मे वे क्रूरता से मर जाते या मारे जाते हैं। या फिर उन्हें कारागार में दंड भुगतना पड़ता है। अपनी महानता को दिखाने वाले अंत में मिट्टी में मिल जाते हैं। इस संदेश से हम यह समझ सकते हैं। इसीलिए कोई भी बलवान क्यों ना हो, धनवान क्यों ना हो, अधिकारी क्यों ना हो, ऊंचे पद पर विराजमान क्यों ना हो, घमंड नहीं करना चाहिए. किसी को पीड़ा नहीं पहुंचानी चाहिए .इस सृष्टि में सब समान है, यह समझना ही इस विषय का संदेश है।

‘श्री कृष्ण भगवान द्वारा सरल तरीके से राक्षसों का संहार’

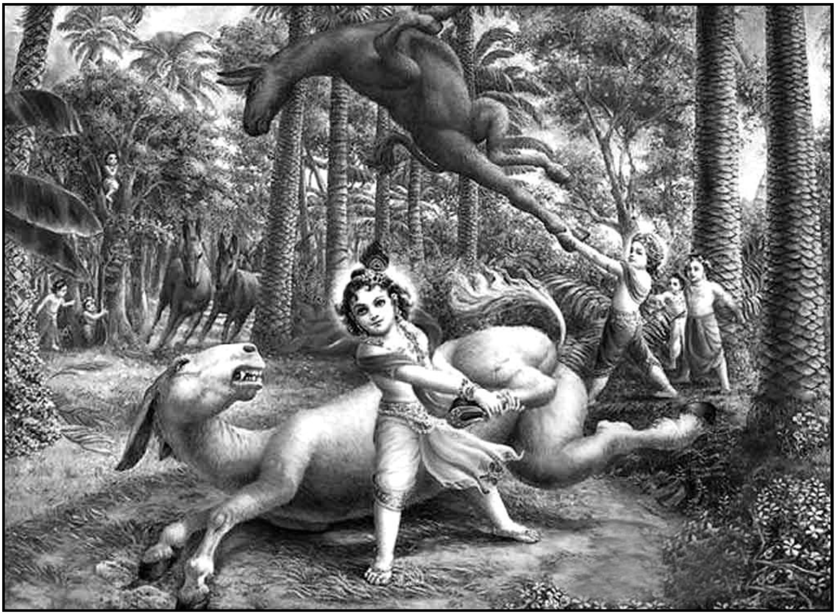

भागवत के कई घटनाओं में भगवान श्री कृष्णा कई राक्षसों को आसानी से संहार किया करते थे.यह हमने देखा .कितने ही राक्षस पराजित भी हुए.इसे भी देखा।

इसका अर्थ संसार में असुर शक्ति ,देव शक्ति नाम के दो प्रकार की शक्तियां है ,लोक और लोको को नष्ट करके, कष्ट पहुंचाने वाले को ही असुर शक्ति कहते हैं.वैसे ही सहायता करना, रक्षा करना और आनंदित करना यह देव शक्ति है। भागवत के विषयों के अनुसार देव शक्ति के आगे असुर शक्ति को शीश झुकाना ही पड़ता है, यानि की उन्हें हारना ही पड़ता है ।

हम किसी में भी कितने बलवान क्यों ना हो, कितने नामी क्यों ना हो, कितने ऊंचे पद पर क्यों ना हो, हम अगर राक्षसों सा व्यवहार करेंगे, तो हमें हारना ही पड़ेगा। यह समझना है। हम ये हैं, हम वो हैं, करके अपनी महानता का बखान नहीं करना चाहिए। अन्याय पूर्वक, द्वेष पूर्वक व्यवहार नहीं करना चाहिए।

यदि हम बलहीन है ,सामान्य है ,धर्म के मार्ग पर चल रहे हैं ,धर्म की रक्षा कर रहे हैं, सबकी अच्छाई के लिए मेहनत करते हैं, तो हम हमेशा ऊंचे

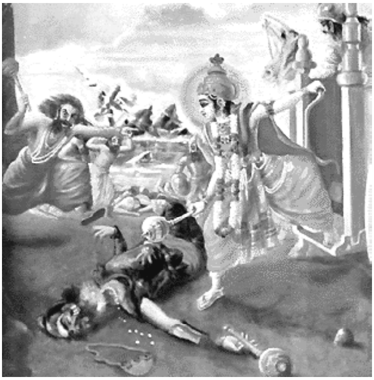

स्थान पर रहेंगे। किसी भी क्षेत्र में विजय पा सकते हैं। भागवत में इस घटना के द्वारा हम यह संदेश जान सकते है।

वैसे ही हम भागवत में घटनाएं देख सकते हैं, कि देव शक्ति स्वरूप बाल रूप में भगवान, महाबलशाली माया रूपी राक्षसों का संहार करना, हमने जाना। क्या वहां बाल योद्धा है? हमें यह जानना होगा कि पूतना, सकटासुर जैसे बड़े-बड़े राक्षस ही नहीं ,धर्म और अधर्म के बीच यानि की धर्म युक्त, देव शक्ति ,अधर्म युक्त, राक्षस शक्ति के बीच का युद्ध है। सृष्टि के विरुद्ध कार्य करने वाले वह चाहे कितने भी बलवान क्यों ना हो, माया रूपी क्यों ना हो, चाहे कितने ही षड़यंत्र कर ले, उनका नाश होना ही निश्चित है। यही इस घटना का अर्थ है। इस घटना का संदेश समझते हुए हमें राक्षसों सा व्यवहार नहीं करना चाहिए। हिंसा नहीं करनी चाहिए। देवताओं जैसा व्यवहार होना चाहिए .यानि कि ध्यान करना चाहिए। यही पत्री जी का भी संदेश है, वह कहते हैं हिंसा छोड़ो- हंसा पकड़ो यानी की हिंसा को छोड़ना है और मांस नहीं खाना चाहिए। हंसा यानि श्वास के साथ ध्यान करना चाहिए, यही पत्री जी का संदेश है।

‘गोपिंकाओ का जल मे खेलना, श्रीकृष्ण द्वारा उनके वस्त्रो का हरण’

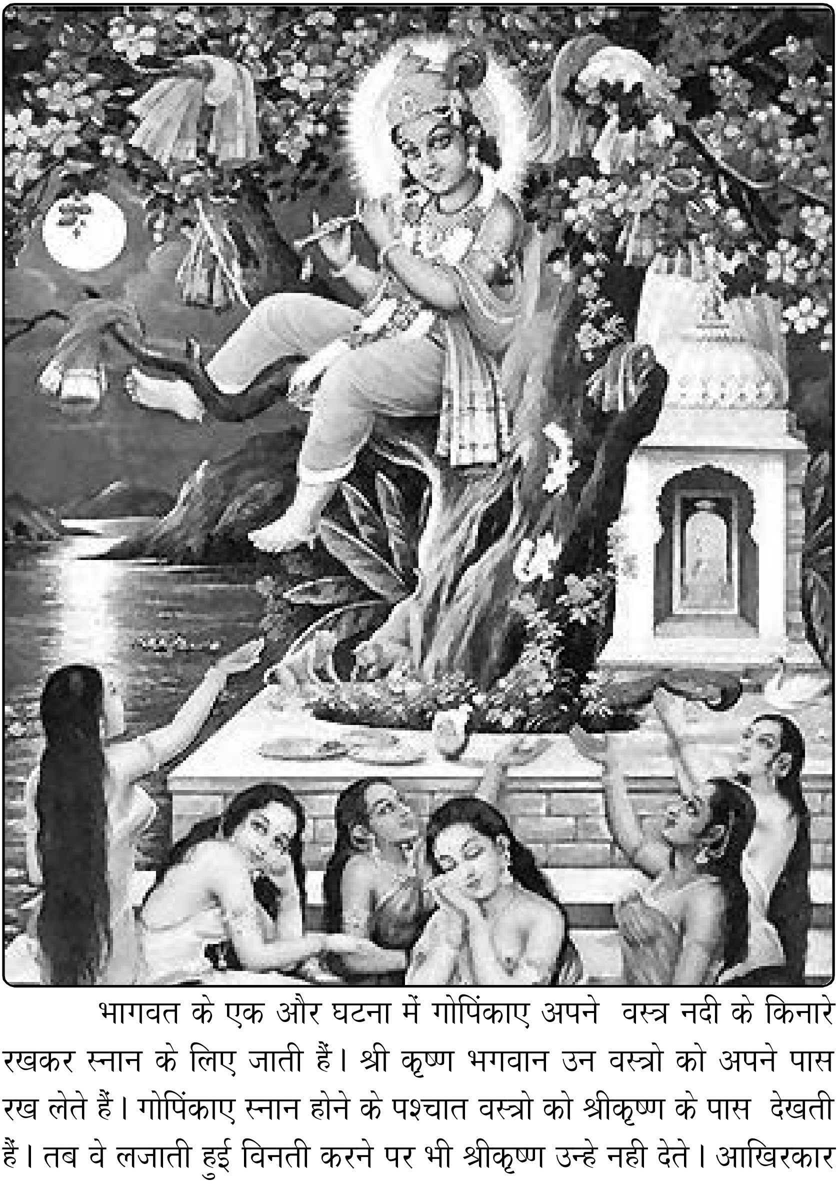

भागवत के एक और घटना में गोपिंकाए अपने वस्त्र नदी के किनारे रखकर स्नान के लिए जाती हैं। श्री कृष्ण भगवान उन वस्त्रो को अपने पास रख लेते हैं। गोपिंकाए स्नान होने के पश्चात वस्त्रो को श्रीकृष्ण के पास देखती हैं। तब वे लजाती हुई विनती करने पर भी श्रीकृष्ण उन्हे नही देते। आखिरकार

वे सभी शर्माना छोड़कर दोनों हाथों को जोड़कर श्री कृष्ण से विनती करने पर वे दे देते हैं।

इस विषय का अर्थ देखते हैं श्री कृष्ण भगवान है। गोपीकाएं यानी मनुष्य, ऐसा सोच सकते हैं, आज के मनुष्यों को जरूरत की सत्य, धर्म, ज्ञान, अहिंसा, प्रेम, आनंद, शांति, ज्ञान, ध्यान जैसे वस्त्रो का त्याग करके सांसारिक नदी मे डूब रहे है. यानी की संसार में इंद्रियों के सुख को ज्यादा महत्व दे रहे है।

यानि कि खाना, पीना, सोना ही नही। दावत, आनंद, मौज-मस्ती, मनोरंजन को ही महत्व दे रहे हैं। संसार को और संसार के सुखों को ज्यादा महत्व दे रहे हैं। उसके लिए वह गलत मार्गो से धन कमा रहे हैं। कुछ दिनों में मनोरंजन खत्म हो जाता है। तब उन्हें जो कपड़े जरूरत है .जिन्हे उन्हें पहनना है, जो इनको चाहिए सत्य,धर्म, प्रेम, अहिंसा, शांति, आनंद, ज्ञान देखने पर वह सब पेड़ के ऊपर श्री कृष्ण के पास दिखाई पड़ते हैं कारण यह है, कि वह सब भगवान के सहज गुण हैं अगर वह ना हो तो कई सुख शांति रहने पर भी, धन रहने पर भी, मनुष्य दुख में डूब जाता है।

वह वस्त्र नहीं होने पर गोपीकाएं नदी से बाहर निकल नहीं सकती. वैसे ही मनुष्य भी दुख से बाहर नहीं निकाल सकते। वस्त्र के लिए श्री कृष्ण को गोपीकाएं का विनती करना, वैसा ही मनुष्य को शांति, आनंद मांगने के लिए भगवान से विनती करना होगा। प्रार्थना करना होगा। कई तरह से पूजा आराधना करना होगा।

लेकिन श्री कृष्णा उन्हें दे नहीं सकते, चाहे वह हाथ जोड़कर विनती करे तब भी। इसका भी एक अर्थ है, मनुष्य व्यर्थ में ही भगवान की आराधना करता है । प्रार्थना करने पर भी उन्हें नही पा सकते .क्योकि मनुष्य अधिक धन अजिर्त करके भी मैं बलवान, मैं उद्योगपति कहकर घमंड करता है। उस घमंड में वह नही करने वाले कार्य भी कर लेते हैं। भगवान के गुणो पर भी सवाल उठाते है। और भी कई तरीके से धन कमा कर यह घर मेरा, यह कार मेरा, यह पत्नी मेरी, यह खेत मेरा, यह ऐश्वर्या मेरा, सब आमदनी दिखाकर घमंड दिखाते हैं।

आते समय कुछ लेकर नहीं आते ,वैसे ही जाते समय भी कुछ नहीं ले

जा सकते। वे समझ ही नहीं पाते की उनका कुछ भी नहीं है। यह सब देखकर हमेशा वह खुश होता रहता है। नहीं करने वाले काम को करके कष्ट झेलने पर भी समझ नहीं पाता। वह समझ ही नहीं पाता, यह सब मिथ्या है, भगवान ही सच है। इसीलिए शांति और आनंद नामक वस्त्र जिसे वह प्राप्त नहीं कर पा रहा। शांति और आनंद चाहिए तो मनुष्य को 'मैं' नामक अहंकार त्यागना पड़ेगा। 'मेरा' नामक अभिमान छोड़ना होगा, जब तक यह सब उनके पास है, वह कुछ नहीं पा सकते।

जब मनुष्य 'मै' नामक अहंकार, 'मेरा' नामक अभिमान छोड़ेंगे। तुरंत जिस तरह गोपिकाओं को श्री कृष्ण के द्वारा वस्त्र प्राप्त हुए उसी तरह मनुष्यों को भगवान से आनंद, शांति, धर्म ,ज्ञान ,अहिंसा, प्रेम, ध्यान, नामक वस्त्र की प्राप्ति होगी, यही इस विषय का संदेश है।

हमें जानना होगा कि ,मनुष्य जब तक सांसरिक सुखों में डूबा-तैरता रहेगा। तब तक वह सत्य, धर्म ,प्रेम ,शांति, आनंद, ज्ञान, अहिंसा को नहीं पा सकेगा, यही इस विषय अर्थ है. यानि दुख से बाहर नही आ सकता।

इसलिए मानव को शांति और आनंद पाने के लिए 'मै'नामक अहंकार, 'मेरा' नामक अभिमान छोड़ना होगा उसे ही हाथ फैलाकर मांगने का अर्थ है।

फिर मै नामक अहंकार, मेरा नामक अभिमान कैसे दूर होंगे। इन दोनो का मन से संबंध है। इसलिए मानव को सांसारिक सुखो को कम करके 'ध्यान' करने से धीरे- धीरे यह दोनो दूर हो सकेगें, तब हमे शाश्वत आनंद प्राप्त होगा।

इस विषय के अर्थ को लोग ना समझकर, अज्ञानता मे रहकर उलट-पलट करके, इसका विपरीत अर्थ निकालकर भगवान की अपमान कर रहे हैं। इसीलिए पुराणों में हर घटना में एक अर्थ छुपा हुआ होता है, यह जान सकते हैं। उसके द्वारा संसार को संदेश मिलता हैं, उसी संदेश को आचरण में लाना है, वैसे आचरण मे लाने पर उनका जीवन धन्य हो जाता है।

‘श्री कृष्ण का गोपिकाओं के संग क्रीड़ा(खेल-कूद)’

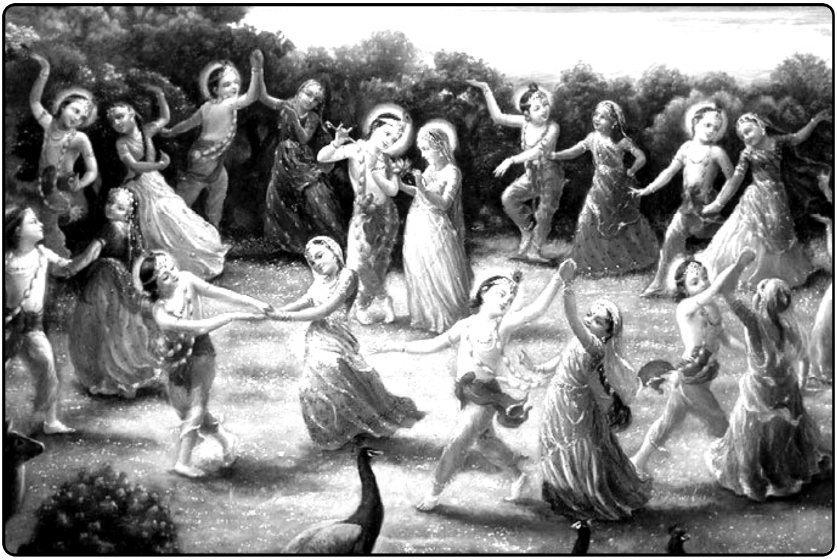

श्री कृष्णा 16000 गोपिकाओं के साथ खेलकूद करते हैं, नृत्य करते हैं, वे सभी गोपिकाओं को अत्यधिक प्रिय थे, गोपिंकाए भी हमेशा उन्हीं के साथ रहती थी। भागवत में हमने जाना, कि श्री कृष्ण अपनी बांसुरी की धुन से गोपिकाओं को मंत्र मुग्ध कर देते थे। कृष्ण के साथ नृत्य करना, खेल खेलना, इन सब घटनाओं को हम देख ही चुके हैं, लेकिन इनका भी अर्थ है।

यहां गोपीकाएं मतलब प्रजा 16000 लोग कहने का भी कारण है। उस समय पृथ्वी पर आज के जैसे करोड़ों में जनसंख्या नहीं थी, इसलिए उस समय के हिसाब से उतने ही लोग श्री कृष्ण को पसंद करते थे। यही अर्थ है। उतनी गोपिकाओं है, यानि कि उतने लोग उन्हें पसंद करते थे ।

यहां पर श्री कृष्ण को जिस रूप में हम देखते है, वह नहीं है। वह आत्मा है, वह सब में है, यानि की आत्मा तो सभी में है।

श्री कृष्णा अपने बांसुरी के धुन से सभी को मंत्र मुग्ध कर देते थे, यानि की वे अपने धुन के माध्यम से लोगों को ध्यान के द्वारा आनंद स्थिति में लेकर जाते हैं। यही अर्थ है।

वे सब उन ही के साथ रहते थे। यानि की ध्यान में रहने के कारण उन्हें

दूसरा कुछ ख्याल सूझता नहीं था। कि ध्यान में निर्विचार की स्थिति यानि की आत्मा के साथ रहते हैं, यानि की ध्यान करने वाले बनकर रहते हैं यही अर्थ है।

इतना ही नहीं गोपीकाएं हमेशा श्री कृष्ण के बारे में विचार करते, उनके द्वारा कहे गए बातों को याद करके रहते, यही अर्थ है । उस समय प्रजा आत्मा से संबंधित विषयों के बारे में बात करते, आत्मज्ञान के बारे में बात करते हैं, यही इस प्रस्तावना का अर्थ है।

वे सभी के साथ आनंद से रहते है, खेलते हैं, यानी की सभी लोग ध्यान करके मानसिक स्थिति के पार, आत्म स्थिति मे, आत्मा के साथ आनंद से रहते हैं। यही अर्थ है, आत्मा के साथ रहना ही भगवान के साथ रहना। सभी लोग हमेशा ध्यान में ही रहते, इस विषय का यही अर्थ है। यानि की उस समय लोग कुछ देर के लिए ही सांसारिक, घर -परिवार, पति को, पत्नी को भूलकर ध्यान में आत्मा के साथ यानि कि श्री कृष्ण के साथ रहते हैं, यही अर्थ है।

यह नहीं की वह उतनी स्त्रियों के साथ संबंध बनाते है। मूर्ख मनुष्य, अज्ञानी मनुष्य, इसका विपरीत अर्थ निकालकर सत्य को भूलकर इन बातों को विपरीत दिशा में ले जाते हैं।

जीवन में हमें सिर्फ आनंद ही चाहिए ना! आनंद कहां मिलेगा? भगवान के पास भगवान कौन है? 'आत्मा'। इसीलिए हमें भगवान के साथ यानि की आत्मा के साथ रहने का प्रयत्न करना चाहिए। यानि कि ध्यान करना चाहिए। गोपीकाएं श्री कृष्ण के साथ रहने का प्रयत्न करती है इसका अर्थ यही है। यही बताने के लिए यानि कि ध्यान करना ही है यही अर्थ है।

जितने भी लोग श्रीकृष्ण के साथ रहने का प्रयत्न करते हैं उन सभी के साथ वे रहते हैं, यानी कि जितने भी लोग ध्यान करें, उन सभी केआत्मा के साथ ही है ना? इसलिए श्री कृष्ण को आत्मा समझने वाले इसकाअर्थ समझ सकेंगे। देह समझेंगे तो इसका गलत मतलब निकालेंगे। सब अपने ज्ञान पर ही निर्भर और समझने पर रहता है।

वैसे ही ब्र्म्मर्षि पत्रीजी को भी इस समय कई लाख गोपीकाएं हैं, यानि कि ध्यानी है, वे अपने मधुर धुन से कई लाख लोगों को ध्यान में आत्मा के साथ रहकर असली आनंद मे मग्न हो रहे है। वैसे ही गोपिकाओं जैसे हमें भी ध्यान करके आनंदमय रहना ही, इस विषय का संदेश है।

‘श्री कृष्ण भगवान द्वारा गायों को चराना ’

श्री कृष्ण भगवान गायों को चराते है। उन्हें प्रेम पूर्वक देखते हैं। उन्हें स्नेह देते हैं। इसका अर्थ यह है कि, वे सभी जीवो को यानि की समस्त जीव जंतुओं से प्रेम करते हैं। उनसे स्नेह करते है, यही अर्थ है।

उनके लिए मनुष्य ही नहीं सभी जीव एक समान है। क्योंकि सभी उन्हीं के रूप है। वे ही सब है। इसलिए सभी की रक्षा करना, प्रेम से रहने केलिए बताना ही इस विषय का अर्थ है। वैसे ही हमें भी सभी जीव जंतुओं के साथ प्रेम से रहना चाहिए। सभी से स्नेह रखना चाहिए। वैसे ही स्नेह धर्म का पालन करना ही इस घटना का संदेश है।

गोपाल यानि कि गायों की रखवाली करने वाला, यानि कि गाय को घास खिलाने वाला हम कह सकते है। लेकिन गोपाल का एक और अर्थ भी है।

गौ यानि इन्द्रिया भी कह सकते है। गोपाल यानि इंद्रियों को पालने वाला, यानी की इंद्रियों को काबू में रखने वाला भी कह सकते हैं।

इसलिए जो कोई अपने इंद्रियों को काबू में रख सकता है। वह सभी गोपाल ही है। यानि कि हम सभी को गोपाल बनना होगा। और अपने इंद्रियों को काबू में करना होगा। वैसे ही इंद्रियों को काबू में रखने वाले अपने जीवन

को भी काबू में रख सकते हैं।

अगर हम इंद्रियों को काबू में रखते हैं। तो हमें मन को भी काबू में रखना होगा। कारण यह है कि सभी इंद्रियां मन के काबू में होती है। मन काबू में रहना है, तो ध्यान करना होगा जो कोई ध्यान ध्यान करेंगे, वह सब अपने इंद्रियों को पूरी तरह से अपने वश में रख सकते हैं। वे सभी गोपाल ही है।

श्री कृष्णा गायों को काबू में रखते हैं। जैसे हम इंद्रियों को काबू में रखते हैं। इस घटना का तात्पर्य यही है। यही संदेश भी है। इसलिए ध्यान करना है। गोपाल बनना है।

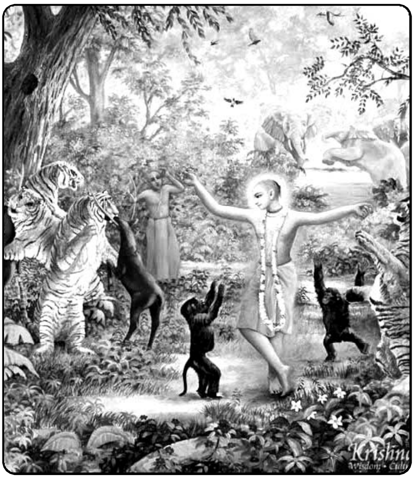

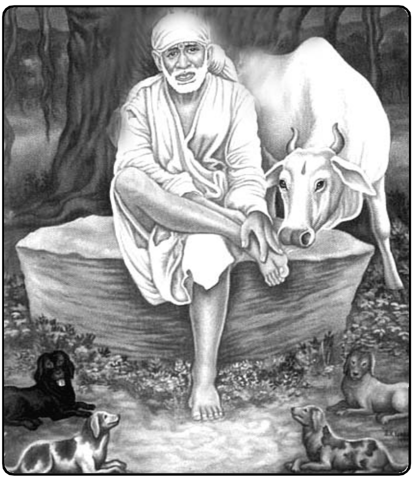

‘श्री कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत को उठाना’

इन्द्र भगवान द्वारकावासियो पर नाराज हुए उन पर पत्थरों की बारिश की। तब श्री कृष्ण भगवान अपनी छोटी उंगली से गोवर्धन पर्वत को उठाकर, द्वारका वासियो की, गायों की, समस्त जीव जंतुओं की, उस पत्थरों की बारिश से जान बचाई, आखिरकार इंद्र शांत हो गए।

इस घटना का अर्थ यह है, कि लोक कल्याणकारी कार्य करने वाले, धर्म की रक्षा करने वाले, चाहे कितना भी बड़ा कार्य क्यों ना हो, आसानी से कर लेते हैं। उन्हें एक पर्वत को अपनी छोटी सी उंगली पर उठाने जितना आसान होता है। यह हमे जानना है कोई भी काम, कोई भी कार्य चाहे, महान कार्य क्यों ना हो, उस काम को वे बहुत ही आसानी करते हैं। यही इस विषय का अर्थ है। ऐसे लोगों के कार्यों में चाहे कितनी ही रुकावटें आए। चाहे कितनी ही रुकावटें लोग खड़ी करें। उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। वह काम रुकेगा नहीं। यही इस विषय का अर्थ है। इस घटना में इंद्र ने पत्थरों की बारिश करके

बाधाएं उत्पन्न किया। कितना करने पर भी, इंद्र श्री कृष्ण को या उनके आश्रय में आने वालों को कुछ नहीं कर पाए। अंत में शांत हो गए।

इसलिए समझना है कि लोक कल्याणकारी कार्य करने वालों को, धर्म की रक्षा करने वालों को, कोई भी कार्य करें, कोई महान कार्य ही चाहे करें, उन्हें छोटी उंगली पर पर्वत उठाने जितना आसान हो जाता है। वैसे लोगों के आश्रय में जाने वालों को भी कोई भी हानि नहीं पहुंचा सकता। उन्हें कभी कोई कष्ट नहीं होने देता। यह हमें जानना है।

इस विषय को हम यदि पत्री जी के द्वारा समझते हैं। तो वह भी संसार में शांति की स्थापना के लिए, हिंसा से मुक्त कराने, मनुष्य अपनी सारी समस्याओं से बाहर निकल कर, संसार में हर एक को ध्यान मार्ग प्रदान करने, जीव हिंसा रोकने के लिए, सृष्टि धर्म का ज्ञान देने के लिए, अत्यधिक प्रयत्न कर रहे हैं यह सिर्फ वह ऐसे महान कार्य कर रहे हैं। जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। ज्ञान यज्ञ, पिरामिड निर्माण जैसे आश्चर्यजनक कार्यों को वह पूर्ण कर रहे हैं। वैसे ही धर्म स्थापना के लिए भी विशेष पूर्वक कार्य कर रहे हैं।

पत्री जी कोई भी कार्य, चाहे महान कार्य ही क्यो ना हो, बड़ी आसानी से पूर्ण कर लेते हैं। उसे कार्य को करते वक्त चाहे कितनी भी बाधाएं आए, कितनी ही रुकावटें आए, वह उन्हें उनके आश्रय में रहने वालों को कुछ नहीं होने देते, हम पत्री जी द्वारा यह जान सकते हैं, उनके हाथ में रुपए न होने पर भी वे लोक कल्याण के लिए बड़े-बड़े प्रोजेक्ट ,बड़े-बड़े पिरामिड बना रहे हैं। कई लाख लोगों के द्वारा ज्ञानयज्ञ करवा रहे हैं। वैसे कार्य करने पर, वैसे कार्यक्रम करने पर, कुछ लोगों के द्वारा उन्हें रुकावटें आती है। वह सभी रूकावटों के बावजूद कार्यों को पूर्ण करते हैं। लेकिन इन कार्यों को वे श्री कृष्णा के छोटी उंगलियों से पर्वत उठाने जितना आसानी से पूरा करते हैं। पूर्ण करते हैं। पत्रीजी के द्वारा इस विषय का संदेश हम समझ सकते हैं। इसलिए हम भी धर्म के द्वारा जीवन यापन करेंगे, धर्म की रक्षा करेंगे।

'श्री कृष्णा चाणुर -मुष्टि कुल को मल्ल युद्ध मे हराना, मदमस्त हाथी को मार गिराना'

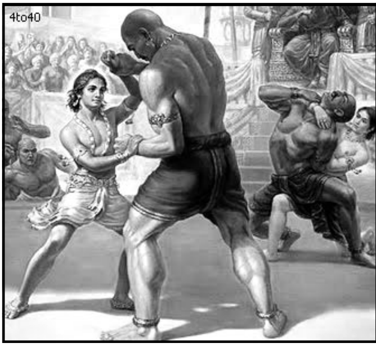

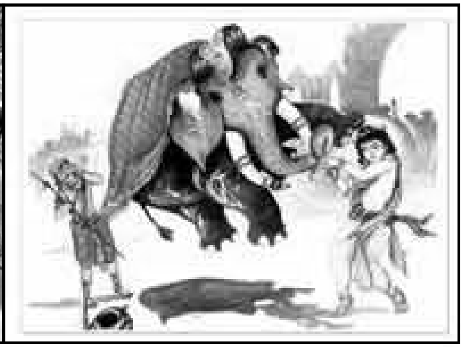

श्री कृष्णा और बलराम राक्षस राज कंस का संहार करके धर्म स्थापना के उद्देश्य से कंस के महल में प्रवेश किये। तब कंस ने उन्हें राज प्रांगण के अंदर आने नहीं दिया। और उन्हें मारने के लिए अपार बलशाली चाणुर-मुष्टि कुल नामक पहलवानों से मल्ल युद्ध करने को कहा। लेकिन उन्हें श्री कृष्णबलराम बहुत ही आसानी से हराते हैं।

वैसे ही मदमस्त हाथी को भी बलराम कृष्ण को करने के लिए भेजा, लेकिन उसे हाथी को भी श्री कृष्ण ने धूल चटा दिया।

यानी कि संसार में धर्म की रक्षा करने का प्रयत्न जो करते हैं, उनके रास्ते में बहुत सारी रुकावटें आती है। कई कष्टो का सामना करना पड़ता है। लेकिन वह कैसे भी हो, कितने गंभीर समस्या ही क्यों ना हो, वह बड़ी आसानी से, बड़ी सरलता से उनसे छुटकारा पा सकते हैं। इस विषय का यही अर्थ है।

इसलिए हमें भी धर्म को आचरण में लाना चाहिए। धर्म की रक्षा करने का प्रयत्न करना चाहिए। तभी अपने जीवन में कितने ही बाधाएँ आए, कितने ही कष्ट आए, हम उसे बड़ी सरलता से दूर कर सकते हैं। यही संदेश है।

'कंस का संहार करना'

राक्षस गुण वाले राजा कंस ने कितने ही षडयंत्र रचे। कितने ही चाले चली, कितने ही माया रूप धारण किए, अंत में श्री कृष्णा को कंस का संहार करना पड़ा, इसमें भी अर्थ है।

कंस श्री कृष्ण के नजदीकी बंधु थे। उनके मामा थे। फिर भी कृष्ण द्वारा दंडित हुए। इसका संदेश यह है कि, भगवान को किसी से घृणा नहीं होती। उनके लिए सब एक समान है। उन्हे अपने बंधु से प्रेम और दूसरों से घृणा ऐसा नहीं है। यह हम समझ सकते हैं। यही नहीं वह कैसे भी हो गलती करें तो, राक्षसों सा व्यवहार करें, तो धर्म के विरुद्ध होने पर दंड भुगतना निश्चित है।

क्योंकि कई लोग श्री कृष्ण भगवान की प्रतिमा की पूजा करते हैं।

भजन करते हैं। समझते हैं कि, वह श्री कृष्ण के नजदीक हो जाएंगे। वैसे ही माथे पर तिलक लगाकर, अंगूठियां पहनकर श्री कृष्ण के भक्त बन जाएंगे। यही नहीं वे हिंदू है, इसलिए भी श्री कृष्ण उन्हें पसंद करेंगे ऐसा सोचते हैं। नहीं करने वाले कार्य भी करते हुए वह समझते हैं कि, कृष्ण उनसे प्रेम करेंगे। हम कैसा भी व्यवहार करें पूजा करके, भजन करके, आराधना करके हमारी वे रक्षा करेंगे। वे हमें कुछ नहीं करेंगे, यह समझते हैं ।

ऊपर दिए गए विषयों के द्वारा भगवान के लिए सब समान है। यह समझना है, वे हिंदु ही हो । कितनी पूजा करें, प्रार्थना करें, भजन करें अगर वे दुष्टतापूर्ण, राक्षस जैसा व्यवहार करें, तो दूसरे जीवों की हिंसा करें तो, धर्म के विरुद्ध कार्य करें तो उन्हें कठिन दंड भुगतना होगा। यह समझ सकते हैं। लेकिन अगर वह हिंदू ना हो, पूजा ना करें, भजन ना करें, प्रार्थना ना करें, अर्चना ना करें, तिलक ना लगाए, विभूति ना लगाए अंगूठियां ना पहने, अगर वे अहिंसा का पालन करें, तो न्याय धर्म मे चले तो, अच्छे कर्म करते रहे तो निश्चित ही उनकी रक्षा होगी, यही इस विषय का अर्थ है।

इसलिए समझना होगा, कि भगवान के लिए सभी समान है। उनको परस्पर भेद नहीं है। उन में बदले की भावना नहीं। कारण यह है कि सभी उन्हीं के रूप हैं। यही नहीं वे हिंदू है पूजा कर रहे हैं, वे अगर गलती करें पाप करें तो उनको दंड जरूर मिलेगा। यानी कि उन्हें कष्ट जरूर भुगतना होगा। यही इस विषय का अर्थ है। हमें उस तरह का व्यवहार नहीं करना चाहिए। यही बताने का संदेश है।

'हमें मत खाइए ! हमसे प्रेम कीजिए !!'

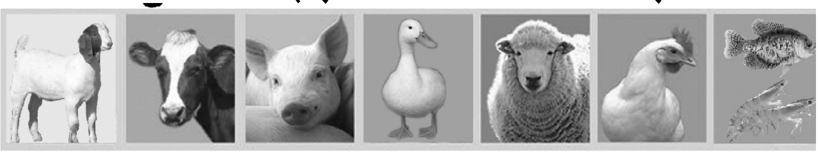

'ईश्वर के लिए सभी जीव बहुमूल्य है'

'शिशुपाल की 100 गलतियों की माफी'

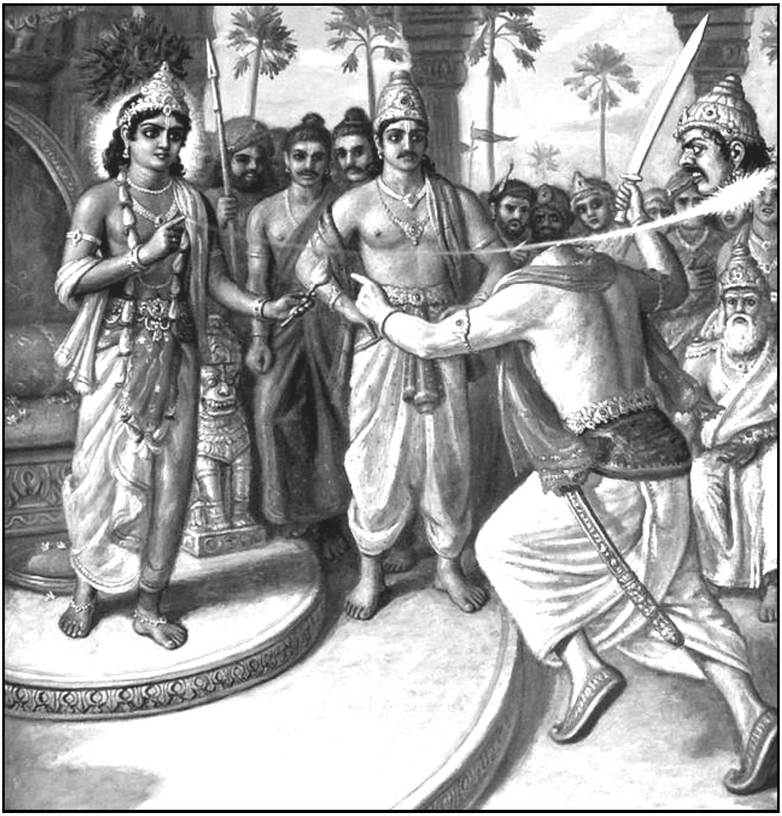

श्री कृष्ण भगवान शिशुपाल के कई गलतियां पर चुप रहे। वैसे ही 100 गलतियां तक उसे माफ किया। लेकिन 100 गलतियों के बाद वह चुप नहीं रहे। शिशुपाल को दंड दिया। उसके सर को धड़ से अलग कर दिया।

इस घटना का अर्थ यही है, कि इस लोक में एक धर्म सूत्र है ,वह यह है कि 'किसी को भी पाप करने पर तुरंत कष्ट नहीं आते यानि वह दंडित नहीं होते जब पाप का घड़ा भर जाता है, तब उनकों कष्टो का सामना करना पड़ता है यानि तब कष्ट आते हैं'।

पाप का अर्थ है सृष्टि के विरूद्ध, धर्म के विरूद्ध किए गए कर्म को ही पाप कहते हैं। हमें जानना है कि हम इस सृष्टि में रहते हैं। वैसे ही इस सृष्टि

को सृष्टि करने वाला सृष्टिकर्ता भी है। उन्हें सभी लोग अलग-अलग नाम पुकारते हैं । मुस्लिम ‘अल्लाह’ कहते हैं, क्रिश्चियन ‘पिता’, हिंदू भगवान, परमात्मा, परब्र्स्म, आदि शक्ति, पराशक्ति, परमेश्वरी, विश्वात्मा, ललिता देवी कहते हैं। ऐसे अलग-अलग नाम से बुलाते हैं।

यही नहीं भगवान ने अपनी सृष्टि में अपने द्वारा निर्मित समस्त जीव यानि कि मानव, जीव-जंतु के साथ सभी आनंद, सुख संतोष से जीने के लिए कोई भी किसी को हिंसा न करके, दुख न देकर, हानि ना करके, कष्ट न पहुंचाने के लिए इस सृष्टि में कुछ नियम बनाए हैं, उन नियमों को ही ‘धर्म’ कहते है।

वैसे ही अगर कोई भी इन नियमों का उल्लंघन करता है ! यानि धर्म का साथ नहीं देता ! यानी सृष्टि के विरूद्ध व्यवहार रखता है! यानि की उसके द्वारा इस सृष्टि के किसी जीव को और प्राणियों को कष्ट या हानि पहुंचती है! तो उन्हें यह सृष्टि धर्म न्याय के आधार पर दंड देती है। उन दंड को ही हम कष्ट का नाम देते हैं। याद रखिए ‘हम कष्टों में है ,यानि की सृष्टि के नियमों ने हमें दंड दिया है’ सोचिए कि हमें कष्ट क्यों आए? यानि कि हमारे द्वारा हिंसा हुई है, या हमने किसी को कष्ट दिया है, अर्थ यही है। हमारा व्यवहार सृष्टि धर्म के विरूद्ध था।

जानिए कि कष्ट हो, रोग से पीड़ित हो, समस्या हो, पाप करते तुरंत नहीं आते, वे सब सृष्टि के धर्मो के प्रकार से आते है, उसे ही पाप का घड़ा भर गया कहते है.क्योकि इस सृष्टि मे ‘पाप करते तुरंत दंड नही मिलता पाप का घड़ा भर जाने के बाद मिलता है’ कारण यह है कि गलती करने वालो को एक अवसर जरूर मिलता है। अपनी की गई गलती को समझकर, गल्तियो को सुधारने के लिए, लेकिन कोई भी अपनी गलतियों को ना मानकर, गलती को बार बार करते है, वे अपनी आदत नहीं बदलते, तो उनकी गलतियों को समझाने के लिए, उनके व्यवहार मे बदलाव लाने के लिए, उनको दंड मिलता है। यानि की गलती करने की, हिंसा करने की, एक सीमा होती है वह सीमा पार को ही ‘पाप का घड़ा’ भर गया कहते हैं।

इस विषय को शिशुपाल की घटना के द्वारा संसार में लोगों को अवगत कराया गया। शिशुपाल ने भगवान की निंदा करके उनका अपमान किया।

परंतु उन्होंने कुछ नहीं किया। कारण यह था कि वह उसकी पहली गलती थी। लेकिन शिशुपाल अपनी गलती ना मानते हुए घमंड किया। श्री कृष्ण भगवान कुछ नहीं कर सकते। उसने ऐसा सोचा, बार-बार निंदा करके अपमान किया। लेकिन भगवान ने उससे कोई बात नहीं की, उसे कुछ नहीं किया, सहन किया, शिशुपाल अपने आप पर घमंड करने लगा। मुझे कोई कुछ नहीं कर सकता। ऐसा सोचा, मैं ही महान हूं, मैं कुछ भी करूं कोई फर्क नहीं पड़ता. मेरी जैसी मर्जी मैं वैसा करूंगा। वैसे ही भगवान की निंदा करके गलतियों पर गलतियां करने लगा। 99 गलतियां करने पर भी भगवान चुप रहे। बर्दाश्त किया। यह बात शिशुपाल समझ नहीं पाया और 100 वां गलती किया । अब भगवान चुप नहीं रहे। उसे जो समय दिया गया था उसने सदुपयोग नहीं किया। उसे उसका एहसास दिलाने के लिए उसकी गलती को समझाने के लिए, उसे दंडित किया. उसके सर को धड़ से अलग किया।

भगवान 100 गलतियां तक चुप रहे। उसे अवसर दिया। यह अर्थ है। यानि की उस समय तक उसका 'पाप का घड़ा नहीं भरा'। फिर सौ गलतियां करने पर दंड दिया। यानि की उसे दिया समय समाप्त हुआ। यानी की पाप भर गया। उसे क्षमा भी नहीं मिल सकती. दंड का भागीदार हुआ।

इस विषय का अर्थ यह है, कि कोई भी पाप कर्म निश्चित समय तक ही कर सकता है। जब तक पाप का घड़ा भर नहीं जाता। पाप भर जाने पर सृष्टि में कोई भी हो महान क्यों ना हो, धनवान क्यों ना हो, मंत्री क्यों ना हो, उच्च स्थान पर क्यों ना हो, उन्हें दंड भुगतना ही होगा। दंड का भागीदार बनना ही होगा। यानी की कष्ट झेलना ही होगा। यही इस घटना का अर्थ है। संदेश भी है।

देखिए कई लोग अपना बल दिखाकर बल यानी कि शारीरिक बल हो, धन का बल हो, अधिकार का बल हो, पद का बल हो, बुद्धि से बलवान हो, उसे देखकर, गर्व से, अहंकार से अपने से नीचे वर्ग के लोगों को तकलीफ देकर, धोखा देकर, उन्हें यातना देकर, उनके अधीनस्थ जीवो को यानि की जंतुओं को यातना देकर, उन्हें मारना मारकर उनके मांस को खाना यानी की सृष्टि के धर्म के विरुद्ध व्यवहार करना, वे सभी सृष्टि धर्म के अनुसार दंडित

होंगे, यानी कष्ट भुगतेगें।

लेकिन हम देखें तो ,वैसे व्यवहार वाले पहले तो उन्हें कुछ नहीं होता, वह चाहे कितनी ही हिंसा करें, कितने ही पाप करें, कुछ भी नहीं होता उनका घमंड और बढ़ जाता है, घमंडी हो जाते हैं, उन्हें सृष्टि के धर्म के नियमों के बारे मे जानकारी नहीं है उन्हें यह भी पता नहीं होता कि, वह इस सृष्टि में ही रह रहे हैं हमेशा अपने बल के बारे में घमंड करके मुझे कुछ नहीं होगा, कैसा भी व्यवहार करु, मुझे कोई क्या कर सकता है? शिशुपाल जैसे अहंकार भाव से रहता है।

देखिए एक मुर्गी खाने पर उसे कोई तकलीफ आएगा क्या? 10 मुर्गी खाने से भी कुछ नही होगा, 50 खाने पर भी कुछ नहीं होगा, 99 खाने से कुछ नहीं होगा, ऐसे खाकर क्या कहते हैं, खाने से क्या होगा? जरूरत पड़ी तो और खाएंगे? वैसे खाते-खाते पाप भरने पर दंड मिलता है, यानी की कोई एक्सीडेंट होता है, पैर या हाथ टूट जाते हैं ,कोई रोग होता है, कोई आग में जल जाते हैं, तब रोने से कोई फायदा नहीं।

इसीलिए देखें कि कई लोगों को वृद्ध हो जाने पर ही कष्ट आते हैं यानी की रोग आते हैं सहन न कर सके जितनी बड़ी बीमारी आती है कारण यह है कि वह युवावस्था में कुछ सोचे समझे बिना ही युवावस्था के घमंड मे किए गए पाप ही वृद्धावस्था में भर जाते है, कष्ट आते है, वृद्धावस्था में कष्ट झेलने का यही कारण है। फिर युवावस्था में पाप करने से कष्ट क्यों नहीं आते? उस समय उनके पाप का घड़ा नहीं भरता।

इसलिए इस घटना का अर्थ यह है कि, पाप करते तुरंत कष्ट नहीं आते ,पाप भर जाने पर ही कष्ट आते हैं, या रोग आते हैं समस्याएं आती है, इस घटना में 100 गलतियां कहा गया है ,लेकिन वहां 100 गलती किए हैं यह अर्थ नही है उसका अर्थ यह है कि पाप भर गया है, वह भी सृष्टिधर्म के अनुसार ही होता है कितने पाप पर कब दंड मिलेगा? कितने मुर्गियों को खाने से कब रोग आएगा। यह सृष्टि धर्म के अनुसार तय होते हैं लेकिन मुख्य रूप से हमें यह जानना है कि दंड तभी मिलता है जब पाप का घड़ा भर जाता है।

पुराणो में भी हम इन विषयों को देखते हैं, कि राक्षसों से युद्ध के पश्चात हारने पर देवता सभी विष्णु जी के पास जाकर अपनी व्यथा सुनाते हैं,

तब विष्णु जी कहते हैं, कि थोड़ा सब्र करो ,जब उनके पाप का घड़ा भर जाएगा, तब मैं ही उनको देख लूंगा।

वैसे ही बुद्ध कहते हैं ,पाप पकने तक ही मनुष्य सुख भ्रांति में रहता है, सुख भ्रम में ही पाप करता ही रहता है, किसी की नहीं सुनता, लेकिन जब पाप भर जाता है, कष्ट आने पर ही उसे पता चलता है कि, वह कष्ट कितना दुखदाई है, कितना कष्टदायक है, नरक के जैसा है, इसीलिए इस विषय को पहले ही समझकर हरेक को पाप नही करना चाहिए, यानि कि हिंसा नही करनी चाहिए ।

उपर के कथनानुसार ‘पाप करने से कष्ट नहीं आते, पाप का घड़ा भरने से ही कष्ट आते हैं यह हमे समझना चाहिए’.

इसलिए जानना चाहिए कि कोई एक मुर्गी को मारने पर, एक बकरे की बलि देने पर, एक मछली को खाने पर हमें खास कष्ट नहीं आते कुछ नहीं होता परंतु वह गलती नहीं है ऐसा मत सोचिए इस गलती को बार-बार मत करिए जीवन को नरक मत बनाइए ‘पाप करने पर भी कष्ट नहीं आए वह पाप नहीं है ऐसा मत सोचिए, यह जानिए कि पाप का घड़ा भरा नहीं है’.

यही भागवत में शिशुपाल की घटना के द्वारा व्यास भगवान ने संसार को संदेश दिया।

'श्रीकृष्ण द्वारा कुचेल की सेवा आदर करना'

श्री कृष्ण के बचपन के मित्र गरीब कुचेल की सेवा करना ही नहीं कुचेल का दिया हुआ सामान्य आहार अटुकुलु (पोहा)श्री कृष्ण ने खाया।

इस घटना का संदेश यह है कि? कोई कितना ही धनी क्यों ना हो, गरीबों को, सामान्य वर्ग वालों को सामान्य से देखना, उनका आदर करना ही बताता है। उच्च वर्ग वाले जो खाने की व्यवस्था करते हैं, उससे कहीं ज्यादा सामान्य वर्ग वाले प्रेम से आदर से जो भी हमें देते हैं, चाहे वह पोहा ही क्यों ना हो उसे प्रेम पूर्वक स्वीकार करना चाहिए, उसे सादरस्वीकार करनाचाहिए श्री कृष्ण संसार को इस घटना से संदेश देते हैं, इस घटना का अर्थ यही है। यानी

कि सामान्य मनुष्य को हम निम्नतम वर्ग में देखते हैं, उनकी अवहेलना करते हैं, उनका अपमान नहीं करना चाहिए, संपत्ति हो, उच्च अधिकारी हो, उन्हें महान समझ कर नहीं देखना चाहिए, सभी एक है, सभी समान है, यह जानना चाहिए, वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। इसीलिए 'है' करके अहंकार नही करना चाहिए 'नही है' करके अफसोस नही करना चाहिए भगवान के लिए इस सृष्टि मे सब समान है। यही विषय मे संदेश है।

ऐसे अगर हम सोचे, तो हर एक घटना मे एक संदेश है, भागवत मे व्यास महर्षि ने संदेशात्मक घटनाओ के बारे मे हमे बताया। अगर वे श्रीकृष्ण के एक वर्ष के जीवन के एक एक क्षण के बारे मे लिखे, तो कई हजार ग्रंथ हो जायेंगें। वैसे लिखना साध्य भी नही, लिख भी ले तो हम पढ़ भी नही पायँगे।

इसलिए संसार को जिन विषयो की आवश्यकता है। मनुष्य जिन्हे आचरण मे ला सके। सिर्फ उन्ही विषयों को ही व्यास महर्षि ने हमें दिया। इसलिए उन मुख्य विषयों के अर्थ को समझकर उनको आचरण मे लाना चाहिए, हमें भी श्रीकृष्ण के समान लोककल्याणकारी कार्य करने चाहिए। वैसे अगर लोग जिये तो यह धरती स्वर्ग बन जायेगा ना ? लेकिन वर्तमान मे भूलोक मे ज्यादातर कंस ही दिखाई दे रहे है। इसीलिए आज का युग ऐसा है। इसलिए भागवत के संदेश को जानना चाहिए। इस कलियुग को सतयुग मे बदलना है ।

'आनंद से जीने का अधिकार परमात्मा ने तुम्हें ही नहीं हमें भी दिया है'

‘पुराण ग्रंथ-शास्त्र’

पुराण ग्रंथ शास्त्र ये सब मानवो को मानव के संसार के लिए कुछ संदेश को देने के लिए पंडित और ऋषि-मुनि द्वारा लिखा गया है, इन मे से कुछ हुई होन्गी कुछ नही हुई होन्गी।

इसलिए हम उनमे के अर्थ समझते है ,उनके द्वारा दिए गए संदेश को समझेंगे, यह नही कि यह हुआ?या नही हुआ? ये सच है?या नही? ये हमे नही सोचना है, उनमे छिपे हुए संदेश को जानने के बजाए उसका गलत अर्थ निकालकर दिशाहीन नही होना है, हमे यह समझना है कि वे सब संदेशात्मक ही है। पंडितो ने जगत को संदेश देने के लिए पुराण ग्रंथ कथा द्वारा दिए गए है।

पंडितो ने किसी ग्रंथ मे शिव को अधिक महत्व दिया, किसी पुराण मे विष्णु को अधिक महत्व दिया, पंडितो की यह एक कला है और कुछ नही । कारण यह है कि देवता सभी एक ही है अलग - अलग नही।सभी मै हूं सब मे भी मै ही हूं विश्व रूप दिखाकर श्रीकृष्ण ने कहा था ना? ‘ब्र्म्ह एक है परब्र्म्ह भी एक है’ अन्नामैय्या ने कहा था ना? ‘सबका मालिक एक है’ शिर्डी बाबा ने कहा था ना? ‘मै ही पिता हॅू हम सब एक ही है’ ऐसा जीज़स ने कहा था ना? इसलिए धर्म के नियम और संदेश को ही हमे ध्यान मे रखना चाहिए, भीतर जाने की कोशिश नही करना चाहिए ।

‘शिबी चक्रवर्ती’

जीवो पर दया रखने वाले शिबी चक्रवर्ती को पंडितो ने कथा के रूप मे प्रस्तुत किया, उन्होने एक पक्षी (कबूतर) की रक्षा करने के लिए अपने शरीर के मांस के टुकड़े को काटकर उसे खिलाया, यानि कि जीवजंतु, पक्षियो और मूक जीव की रक्षा करने के लिए पंडितो ने ऐसा सिद्धांत बनाया, इसका अर्थ यह है कि हमे भी मुर्गीयो, जीव-जंतुओं की रक्षा करनी चाहिए उन्हे मारना नही चाहिए, उनका मांस खाना नही चाहिए, उनके ऊपर दया की भावना रखनी चाहिए ,यह पुराणो मे कथित संदेश है। यह नही कि उन्हे अपना मांस काटकर खिलाये, उनका मांस भी ना खाये यही बताना चाहते है।

सोचिए एक पक्षी की जान बचाने के लिए शिबी चक्रवर्ती ने अपना मांस काटकर खिलाया ,लेकिन हम सब पक्षियो का मांस खाकर अपने शरीर को बड़ा रहे है ।

‘भक्त कन्अप्पा’

वैसे ही भक्त कन्अप्पा की कथा के द्वारा भगवान पर अपार भक्ति और विश्वास रखने का संदेश ही नही, भक्ति कैसी होनी चाहिए, यही पंडितो ने दर्शाया।

भक्त कन्अप्पा की भगवान मे भक्ति सामान्य, इच्छित भक्ति थी, भक्त कन्अप्पा भगवान के दर्शन के लिए आतुर, कौतूहल, तपस्या करके अपने-आप मे डूब जाते है। वो क्या करते है किससे बात करते है, यह सब जानने की स्थिति मे नही है, एक ही आतुरता, एक ही प्रण, भगवान को पाने की इच्छा, उनके दर्शन की लालसा ।

इस अपरम्पार भक्ति से उन्हे कुछ सूझता नही, उनकी मानसिक स्थिति भी प्रभावित हो रही थी वो जो कर रहे है क्या वो ठीक है ? सही है या गलत? ये भी ना सोचते हुए सोचने की स्थिती मे भी वे नही थे। भक्त कन्अप्पा की तपस्या उनका दुख उनकी आराधना सब कुछ भगवान ही है, इतना ही नही उन्हे भगवान के बारे मे कुछ नही मालूम, इतना मासूम है कि, कन्अप्पा भगवान कैसे

रहते है? कहां रहते है?उनके पास कैसे जा सकते है ? उन्हे आंखो से देख सकते है क्या ? या नही? क्या उन्हे भोजन की जरूरत है ? क्या उन्हे भूख लगती है? या नही? खाते है? कि नही? क्या खाते है? उनकी मासूमियत से पता चलता है कि वह कुछ नहीं जानते ।

वैसी स्थिति में भगवान को भी मनुष्यों की भांति भूख लगती होगी, शायद उनको भूख लगी है, यह सोचकर उसने शिवलिंग को मांस का भोग लगाया, इसका अर्थ यह है कि कन्अप्पा की भक्ति सम्मोहित भक्ति थी यह नही कि आप भी मांस खा सकते हो, खा लीजिए, कृपया खाये,सच तो ये है कि कन्अप्पा से मांस खाने वाले बराबरी कर सकते है क्या? कनअप्पा और वे एक है क्या ?

उस समय उनकी भक्ति की परीक्षा लेने लिए भगवान ने अपनी आंखो से अश्रुधारा बहाई । तब कनअप्पा ने अपनी दोनो आंखो को निकालकर उनके समक्ष रख दिया, क्या आप ऐसा सकते है ?क्या आप हाथ काटकर दे सकते है? आखिरकार अपनी उंगली दे सकते है? यानि कि भगवान के लिए हम इतना भी नही कर सकते ।कनअप्पा ने भगवान को मांस का भोग लगाया तो हम भी मांस खायेंगे ऐसे लोग को क्या कहे हम ? आप किस प्रकार के भक्त है? सोचिए, इसलिए इन पुराण ग्रंथो मे लिखे संदेश को हमे समझना चाहिए, और अगर हम दूसरे तरीको से समझते है तो नुकसान हमारा ही है ।

इसका अर्थ भगवान के दर्शन चाहने वालो को सब मोह-माया त्यागना होगा, 'मै' का भाव भी छोड़ना होगा ,उस स्थिती मे जिन परिक्षाओं से हम गुजरते है वे काफी कठिन परीक्षा होती है, उन्हे भी स्वीकार करना होगा तब ही हमे भगवत साक्षात्कार का लाभ मिलेगा, इस कथन का यही संदेश है।

ये नही कि आँख नही है,आँख चाहिए। चल नही सकता, पांव चाहिए। हाथ टेढ़े है, इन्हे ठीक कर दो। यह सब इच्छा रखने वाले भक्त कैसे कहलायेंगे?

भगवान के लिए आँख दान करने वाले, दृष्टिहीन होने वाला, वही भगवान के लिए चिन्तित रहता है, वही सच्चा भक्त भी है ,उसे ही मुक्ति मिलती है, भगवान का आश्रय भी वही पाता है ।

'यमलोक'

यमलोक मे यमधर्मराज सिंहासन मे विराजमान है। उनके साथ ही चित्रगुप्त भी है। चित्रगुप्त के सामने एक बड़ी किताब (पुस्तक) रखी हुई है। उस पुस्तक मे मनुष्य के पाप और पुण्य का हिसाब लिखा हुआ होता है। वैसे ही यम लोग में यमदूत भी होते हैं, वे मरने वालों को यानी कि जिनकी आयु पूर्ण हो जाती है, उन्हे यम लोक लेकर आते हैं। पाप करने वालों को यमलोक में दंड निश्चित करते हैं। वैसे ही आपना दंड भोगते हैं संक्षिप्त में कहा जाए तो पुराणो, ग्रंथो द्वारा और पंडित द्वारा हमें यमलोक के बारे में यही बताया गया है, लोग भी यमलोक के बारे में यही जानते हैं।

लेकिन हमें यह सोचना है कि यमलोक है? कि नहीं ? यह भी नहीं। यमराज है? कि नहीं? यह भी नहीं। यह कि पुराणो द्वारा हमें जो संदेश मिले हैं वहीं मुख्य है। यही नहीं पुराणो द्वारा पंडितों द्वारा मनुष्य लोग को कौन से संदेश मिले ? वह संदेश क्या है ?यही हमें जानना है उन्हें आचरण में लाना है तभी

हमारे जीवन में आनंद का अनुभव हो सकता है। इसीलिए इस पुराण का अर्थ और उनके संदेशो को जानना है।

देखिए कोई भी मरने के बाद के तुरंत बाद दो यमदूत आते हैं। वह मरने वाले व्यक्ति को यमलोक में लेकर आते हैं। वहां पर उन्हें यम के सामने खड़ा किया जाता है। तब यम धर्मराज पास में खड़े चित्रगुप्त से उनके पापों का हिसाब पूछते हैं। उनके किए गये पापों का हिसाब पूछते हैं। तुरंत चित्रगुप्त पुस्तक का पन्ना पलटते हैं, उसे पन्ने में मरने वाले का खाता होता है। उसे खाते के हिसाब से उनके किए गए पापों को पढ़ता है। उसे सुनकर यम धर्मराज उनके हिसाब से दंड निश्चित करते हैं। यमदूत उनको दिए गए दंड को अमल करते हैं। यही सब यमलोक में होने वाले कार्यक्रम है। लेकिन यहां पर हर एक विषय में एक संदेश है। वह क्या है जानेंगें।

'मरने के उपरांत उन्हें लेकर जाने के लिए दो यमदूत आते हैं' सब यही समझते है कि भूलोक में मरने के बाद कोई जीवन नही होता है। लेकिन मरने के बाद भी हम रहते हैं। हमारा और भी जीवन है, इस घटना से हमें यही संदेश मिलता है।

फिर कौन है जो मर गया? यानी कि शरीर। यानी कि शरीर वो तो जल गया, वह ऊपर (मर गया)चला गया इसीलिए वह 'मर गया' कहते हैं। मर गया यानी कि ऊपर चला गया यही अर्थ है। यह नहीं कि वह नहीं है।

इसका अर्थ हमको मृत्यु नही है। हमारा और भी जीवन है, यह समझना होगा इसलिए और भी जीवन होने पर उस जीवन के बारे में भी तो सोचना होगा हमें? वह जीवन भी तो अच्छा होना चाहिए ? उस जीवन को सुखद रखने के लिए हमें क्या करना है, वह भी सोचना होगा ना? तो क्या हम इस बारे में सोचते हैं ? नहीं। हमें इस विषय के बारे में जानने के लिए ही पंडितों ने इस पुराण ग्रंथो के द्वारा हमें यह संदेश दिया है कि, मृत्यु के बाद भी जीवन है।

इतना ही नहीं। इस सृष्टि में दिखाई देने वाला एक भूलोक ही नहीं । अपितु और भी कई लोक हैं इस घटना के द्वारा एक और संदेश हमें मिलता है। जिसके अनुसार हम कुछ जीवन इस शरीर के साथ ...दिखाई देने वाले लोक में रहते हैं। इस शरीर को छोड़ने पर दिखाई देने वाले इस रूप के साथ एक और

लोक में भी प्रवेश करते हैं। यह भी समझ सकते हैं, इतना ही नहीं भूमि के ऊपर अपने किए गए कर्म अनुसार जिस लोक में जाना है। उसे लोक में ले जाने के लिए अदृश्य रूप में दो मास्टर्स आकर हमें ले जाते हैं। यानी कि, दो यमदूत आना ही इसका अर्थ है। इस एक घटना में ही कितना अर्थ है यह हम समझ सकते हैं। इस घटना के द्वारा पंडितों ने हमें बहुत सारा ज्ञान दिया है।

वैसे ही 'यमदूत मरणोपरांत यमलोक ले जाकर यमधर्मराज के समक्ष खड़ा करते हैं। तब यमराज चित्रगुप्त से इन्होंने कितने पाप किए हैं ? यह पूछते हैं। तब चित्रगुप्त अपने पास रखे हुए बड़े से पुस्तक के पन्नों में उनका खाता खोलते हैं' ।

इसके अनुसार पाप करने वाला कोई भी हो! कितना महान क्यों ना हो, आखिरकार उन्हें हिसाब देना ही होगा। यह समझना होगा। इसलिए हमारे किए गए कार्यों का लेखा पूछने वाला कोई नहीं। ऐसा नहीं सोचना। निसंदेह हमारे द्वारा किए गए कार्यों का उत्तरदायित्व, हमें ही होना होगा। इसीलिए किए गए कार्यों को सोच विचार करके ही करना इसका संदेश है, इतना ही नहीं इस भूमि पर कोई कितना महान क्यों ना हो, गलती करने पर इस सृष्टि के न्याय स्थान पर समान रूप से दोषी बने खड़े होना होगा, हमारे द्वारा किए गए गलतियों का, पापों का उत्तरदायित्व भी हमें ही होना होगा यही इस घटना का संदेश है।

चित्रगुप्त के पास हमारे कर्मों का लेखा-जोखा (चिट्ठा) है इसका अर्थ यह है कि इस सृष्टि में कोई कुछ भी करें? किसी प्रकार का भी कर्म करें उसका रिकॉर्ड होता है। यह मानना है जब हम गलतियां, या पाप करते हैं, तो हमें यह आभास नहीं होता की कोई देख रहा है ,किसी को कुछ नहीं मालूम ऐसा हम सोचते हैं। लेकिन यहां पर कोई ना देखें फिर भी सृष्टि में हमारे द्वारा किए गए कार्यों को एक-एक क्षण का रिकॉर्ड होता रहता है। उसे कार्य को हम चाहे तो किसी बिया बान प्रदेश में ही करें, कमरे के बंद दरवाजे के भीतर करें ,अंधकार गुफा में करें! सभी रिकॉर्ड होते रहे होते हैं यही चित्रगुप्त के चिट्ठे में होते हैं, यानी की सृष्टि में सभी लोगों का एक खाता होता है। हमारे कर्म रिकॉर्ड होते हैं पंडितों ने इस घटना के द्वारा हमें संदेश दिया। आध्यात्मिक परिभाषा में चित्रगुप्त के चिट्ठे को ही 'आकाशिक रिकॉर्ड' कहा जाता है.।

उसके बाद 'चित्रगुप्त उनके द्वारा की गई गलतियों को एक-एक करके

पढ़ते हैं'।

यानि की उसने अपने जीवन में कितने मुर्गियों को खाया! कितने बकरियों को मारा! कितनी मछलियों को तेल में तलकर खाया ! बताते हैं। और उसने कितने लोगों को लूटा, कितने लोगों पर अत्याचार किया ,अपमान किया, नष्ट पहुंचाया, कष्ट दिया यह भी पढ़ कर बताते हैं. इतना ही नहीं कोई भी किसी का पैर काट दिया हो, किसी का हाथ काट दिया हो ,किसी पर एसिड फेक दिया हो, अपनी पत्नी को शारीरिक कष्ट दिया हो, यानि की कोई भी कुछ भी करें, कितना करें सभी पढ़ते हैं अर्थ यह है कि हमारे द्वारा किया गया हर कार्य, हर गलती, हर पाप मोती की माला की तरह पिरोया जाता है। कि हमें कोई भी देख नहीं रहा ,यह नही समझना ही इसका संदेश है।

फिर कब भुगतेंगें? कहां भुगतेंगें ? कैसे भुगतेंगें ? यानी की पाप भर जाने के बाद भूमि पर कष्ट के रूप में, रोग द्वारा, एक्सीडेंट द्वारा, जरूर भुगतेंगें। भुगतेंगें नहीं, भुगत रहे हैं।

तब 'यम धर्मराज उनके पापों के हिसाब से दंड देते हैं यानी कि मुर्गी के पैरों को काटा तो उनके पैरों को काटो। मछलियों को तेल में तला तो इन्हें भी तेल में तलो। उनकी पत्नी को मारा तो कोड़े से इन्हें भी मारो, ऐसे यम धर्मराज यमदूतो को आज्ञा देते हैं, तब यम के सेवक दंड देकर इसे अमल में

लाते हैं’ इस घटना का अर्थ यह है, कि वहां यमराज दंड निर्णय करते हैं, यमदूत उस दंड को अमल में लाते हैं कि नहीं। इस सृष्टि में कोई भी हो, उसे पापों का दंड जरूर भुगतना पड़ता है, यानी कि हमे कष्टो को झेलना इस विषय में संदेश है, इतना ही नहीं जो जैसा पाप करेगा उसे वैसा ही दंड भुगतना पड़ेगा, जितना पाप उतना ही दंड भुगतना ही इस घटना का संदेश है।

इतना ही नहीं हम अपने किए गए पापों का दंड ऊपर जाकर भुगततें हैं। कष्टो के रूप में भूमि में ही भुगततें हैं। इसलिए जिस प्रकार का हिंसा करते हैं। उसी प्रकार की हिंसा भुगतते भी है। जैसा पाप करते हैं वैसा ही नरक भूमि पर भुगतते हैं। जैसी गलती करते हैं, वैसा ही दंड भूमि में देह में, पीड़ा के रूप में, भुगतते हैं। इस घटना को पंडितों ने यमलोक के घटना के द्वारा हमें संदेश दिया. इसे ध्यान में रखते हुए हमको गलतियां नहीं करनी चाहिए। पाप नहीं करनी चाहिए। जीव हिंसा नहीं करनी चाहिए .मांस नहीं खाना चाहिए। यह समझना चाहिए।

यह नहीं कि, क्या यमलोक है? या नहीं? क्या यमराज है ? या नहीं? यह मुख्य नहीं। पंडितों ने इस लोक में पुराण के द्वारा जो संदेश दिए हैं वही मुख्य है, इसलिए ग्रथों को संदेश के रूप में हम लेते हैं तो हमें लाभ प्राप्त होगा। और अगर इसमें विचार-विमर्श करेंगे तो हमें कुछ प्राप्त नहीं होगा। नष्ट ही होगा।

'भक्त मार्कन्डेया'

शिव का भक्त मारकंडेय, स्वल्प आयु, कम आयु के साथ जन्म लिए। लंबी आयु के उद्देश्य से शिव के आश्रय में गए। यानि कि हम शिवलिंग को ही शिव मानते हैं उनके आश्रय में गए। जब मारकंडे की आयुष पूरी हो गईः अंतिम घड़ी आ गई, यथाविधि यमराज मारकंडेय के प्राण यानि की आत्मा को

ले जाने के लिए आये। लेकिन मारकंडेय ने शिवलिंग को पकड़कर छोड़ा नहीं। यानि कि शिव को कस कर पकड़ लिया यानी कि उनके आश्रय में चले गए यह कह सकते है। फिर भी यमराज ने मारकंडेय को लेकर जाने का प्रयत्न किया तब शिवजी प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होकर यमराज को भी दंड देने का प्रयास किया। कि मेरे आश्रय में रहने वाले भक्त को तुम कैसे ले जा सकते हो? ऐसा कहने पर यम शिव को प्रणाम करके मारकंडेय को वहीं छोड़कर चले जाते हैं। यह सूक्ष्म रूप से पुराण की कथा है, इसका भी हम अर्थ समझते हैं । मारकंडेय यानि कि एक मनुष्य, शिव यानी की आत्मा, यम यानि की मृत्यु, यह अर्थ है।

मारकंडेय अल्प आयु से जन्म लिए यानि कि वह मारकंडेय नहीं है। मनुष्यों की आयु कम ही होती है। इसका कारण देवता गण है अगर हम देवताओं से मनुष्यों की बराबरी करें तो, मनुष्यों का जीवन अल्प यानि कि बहुत कम होता है। इसीलिए मनुष्यों के जीवन को पानी के बुलबुले से नापते हैं। तृणप्रायम भी कहते है।

मार्कंडेय की कहानी से एक और विषय का पता चलता है कोई भी हो आयुष पूर्ण हो जाने पर शरीर को छोड़कर जाना ही है। अगर हम यह निश्चय कर ले कि हम, शरीर का छोड़कर नहीं जाएंगे! यानि कि भूमि में तुम रहने का निश्चय करते हो ! यानी की तुम इस भूमि पर इस शरीर के साथ रहना चाहे तो, मार्कंडेय के जैसे शिव के आश्रय में जाना होगा। यानि की आत्मा के आश्रय मे जाना होगा। तब यमराज जो की मृत्यु हैं, वह भी आपको कुछ नहीं कर सकते। यानि कि आपकी मृत्यु नही होगी। यही अर्थ है।

वह स्थिति आना है तो, इस घटना का सही अर्थ जानना होगा। शिव यानि की शिवलिंग नहीं 'आत्मा' है इस विषय के बारे में वेमन योगी ने स्पष्ट रूप से बताया उन्होंने बताया कि

' शिला को देखकर मनुष्य ;
यही शिव है मानते है
शिला तो पत्थर है शिव नहीं
उसमें ही शिव है पर उसे पता नही
विश्वदाभीरामा विनर वेमा'

तात्पर्य यह है कि शिला यानि पत्थर को देखकर मनुष्य उस को शिव मानते हैं। लेकिन पत्थर तो पत्थर ही है, शिव कैसे हो सकता है? मनुष्य आत्मा के रूप में अपने अंदर के शिव को क्यों नहीं समझ पा रहे है? यह वेमन योगी का प्रश्न है।

इसीलिए हनुमान ने अपने ह्मदय में बसे राम को छाती चीर कर दिखाया। इसे अगर हम समझ सके तो मार्कंडेय के वृत्तांत को भी हम समझ जाएंगे, यदि हम यह नहीं समझते आप कभी भी मार्कंडेय जैसे नहीं बन पाओगे। शिव से रक्षा नहीं पा सकते ।

इसलिए शिव के आश्रय में जाना यानि की आत्मा के आश्रय में जाना यही अर्थ है। आत्मा के आश्रय में जाना यानि कि आत्मा कहां है? आत्मा सभी में है। आप में भी है। शिव को कसकर पकड़ना यानि कि आपके अंदर कीआत्मा को कसकर पकड़िए, यही अर्थ है। आत्मा को कसकर पकड़ना, यानी हमेशा आत्मा के साथ ही रहना, आत्म स्थिति में रहना, वैसे ही आत्मा के साथ का मार्ग ही है ‘स्वास के ऊपर ध्यान रखना ध्यान करना ‘

वैसे ही जो कोई निरंतर ध्यान स्थिती मे रहते है। बाह्य विषयो को अनदेखा करते है। आत्मा के साथ होते है !यानि कि शिव के साथ होते है !उन्हे मृत्यु नही आती। शरीर को छोड़ने की आवश्यकता नही। यानि कि उन्हें यम भी कुछ नहीं कर सकते ,यही अर्थ है।

इसलिए जानिए ‘आत्मा के पास, यानी शिव के पास है। वैसे लोगों से यम भी दूर रहते हैं। यानि की मृत्यु भी बहुत दूर है । यानि की मृत्यु नहीं है ।’

वैसे ही कई योगी निरंतर ध्यान स्थिति में रहकर कई हजार साल शरीर के साथ रहते हैं यह तो हम जानते ही हैं। वैसे ही महा अवतार बाबा जी भी है। यह लोग कहते हैं। वैसे ही राघवेंद्र स्वामी समाधि में ही ध्यान स्थिति में है, ऐसा भी लोग कहते हैं। वैसे ही वेंकटेश्वर स्वामी भी ध्यान स्थिति में अभी भी है, यह भी कई लोग बताते हैं।

वैसे ही भक्त मार्कंडेय आत्मा को पकड़ कर रहने के कारण, यानि कि ध्यान करने के कारण, आयु की समाप्ति होने पर भी यम को आने नहीं दिया। यानि कि मृत्यु पर विजय पा लिया. वैसे ही हम भी निरंतर ध्यान में रहने से

मृत्यु पर विजय पा सकते हैं। जब तक हो सके शरीर के साथ रह सकते हैं।

फिर 'स्वास के ऊपर ध्यान 'द्वारा आत्मा के साथ कैसे रह सकते हैं यह भी जानेंगे। पहले हम और शरीर, एक नहीं है। देह के साथ मन, आत्मा भी है यह जानना होगा। फिर हममे जो आत्मा है उसके साथ कैसे रहना है यह जानते हैं।

हम अगर आंखें खुली रखें तो देह के साथ है। लेकिन हमें आत्मा के साथ रहना है, तो पहले आंखें बंद करनी होगी। जैसे ही हम आंखों को बंद करते हैं, हमारे अंदर विचार आने लगते हैं। यानि कि ,अब हम देह के साथ नहीं है । विचार मन से आते हैं यानी कि अब हम मन के साथ हैं। लेकिन हमें तो मन के साथ भी नहीं रहना है, आत्मा के साथ रहना है। इसलिए विचारों को स्वास पर लाकर मोड़ना है। वैसे मोड़ने पर विचार कम होते जाते हैं, वैसे विचार कम होते होते एक स्थिति आती है जब विचार पूर्ण रूप से कम हो जाते हैं, विचार नहीं है यानि कि मन नहीं है ना ? यानि कि देह के साथ नहीं। मन के साथ भी नहीं। यहां पर सिर्फ आत्मा है ना ?अब हम आत्मा के साथ हैं, फिर आत्मा के साथ यानी कि शिव के साथ है ना? वैसे शिव के साथ होने पर यम हमारा कुछ कर सकते है क्या? हमारे पास आने की भी कोशिश भी कर सकते है क्या? यानि कि ध्यान करने से यम को भी दूर भागना पड़ता है। यानि की मृत्यु भी हमें कुछ कर सकती है क्या? समझना होगा। मृत्यु को भी भागना पड़ेगा ।

इसके अनुसार हमे यह समझना होगा कि, ध्यान स्थिती मे रहने वाले वे अपनी इच्छानुसार आयु समाप्त होने पर भी जीवित रह सकते है। यह जानिए। यानि कि शरीर के साथ रह सकते है। यही हम मार्कंडेय पुराण के संदेश के द्वारा समझ सकते हैं। जानिए, ध्यान करने से आत्मा यानि कि शिव के आश्रय में है। पूजा करने से शिवलिंग यानी कि, पत्थर के आश्रय में है। इसलिए ध्यान करिए शिव के आश्रय में रहिए।

ध्यान नहीं करने से यम पास आयेंगे - ध्यान करने से यम दूर जाएंगे

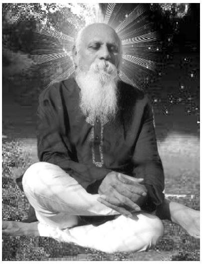

ध्यान की विधि सांस पर ध्यान

जिस किसी को जो कोई आरामदायक आसान हो उसमें आराम से बैठकर... दोनों हाथों को जोड़कर... दोनों आंखों को बंद करके... प्राकृतिक रूप से होने वाला सांस लेना और छोड़ने की प्रक्रिया का अवलोकन करना चाहिए!

बीच-बीच में अनेकानेक सोच मन में आते हैं उन्हें वहीं के वहीं कटौती करके... फिर से बार-बार सांस पर ही ध्यान ले जाते रहना चाहिए... धीरे-धीरे निर्विचार की स्थिति मिलती है.... चित्त वृत्तों का निरोध होगा... मन निर्विषय, शून्य हो जाएगा। मन को शांति मिलेगा। यही ध्यान की अवस्था है।

इस निर्विचार अवस्था में होने वाले अनेकानेक शारीरिक, नाड़ी मंडल, आत्मा अनुभवों का अवलोकन करना चाहिए। इस स्थिति में ब्र्मांडीय प्राण शक्ति अत्यधिक मात्रा से शरीर में प्रवेश करके नाड़ी मंडल को शुद्ध करता है। उस ऊर्जा के कारण बीमारियां कम हो जाते हैं। नाड़ी मंडल शुद्ध होने के कारण कर्मों का नाश होते हैं।

हर दिन अपने उम्र के हिसाब से... जितना उम्र हो कम से कम उतने मिनट... जरूर... दिन में दो बार... ध्यान करना चाहिए।

श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

1) आत्म शास्त्र । Rs.200/-
2) ध्यान विद्या । Rs.160/-
3) भगवद् गीता का सार । Rs.160/-
4) एक और जन्म । Rs.160/-
5) सत्य मार्ग । Rs.160/-
6) 'गाइडिंग' ध्यान क्यों नही ? Rs.120/-
7) भगवान कौन हैं। Rs.120/-
8) कर्म सिद्धांत । Rs.120/-
9) विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ Rs.120/-
10) मरने से पहले मरना है। Rs.130/-
11) ब्रह्म ज्ञान। Rs.100/-
12) यह जीवन क्यों हैं ? Rs.100/-
13) मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।.. Rs.80/-
14) भागवत के दृश्यों का अर्थ...................... Rs.80/-
15) दुख निवारण का मार्ग Rs.75/-
16) आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ? Rs.60/-
17) क्या हम इस लोक के वासी हैं
या परलोक के वासी हैं? Rs.50/-

For Books Please Contact :

TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

इस जगत में भगवान श्री कृष्ण के जीवन की घटनाओं को सिनेमा के रूप में, नाटकों के रूप मे, टीवी सीरियल के रूप में, देखकर आनंदित हो रहे हैं और अपना समय व्यतीत कर रहे हैं। लेकिन व्यास महर्षि ने इस महापुरुष की जीवन गाथा को इस संसार के आनंद के लिए नहीं दिया है। श्री कृष्ण के जीवन के हर घटना से उन्होंने इस दुनिया को संदेश दिया है, इसीलिए हर घटना केवल हमारे 'मनोविनोद के लिए नहीं, वरन संदेशात्मक' में लेना चाहिए। इन संदेशों को हम अपने आनंद के लिए नहीं ,वरन इन विषयों का अर्थ जानकर अपने जीवन में इनका अनुसरण करके हम अपने जीवन को धन्य बना सकते हैं ।

Rs.80/-

- तटवर्ती वीरराघव राव